वर्ष 44 अंक 10 अक्टूबर 2017

₹ 15/-

हँसती दुनिया

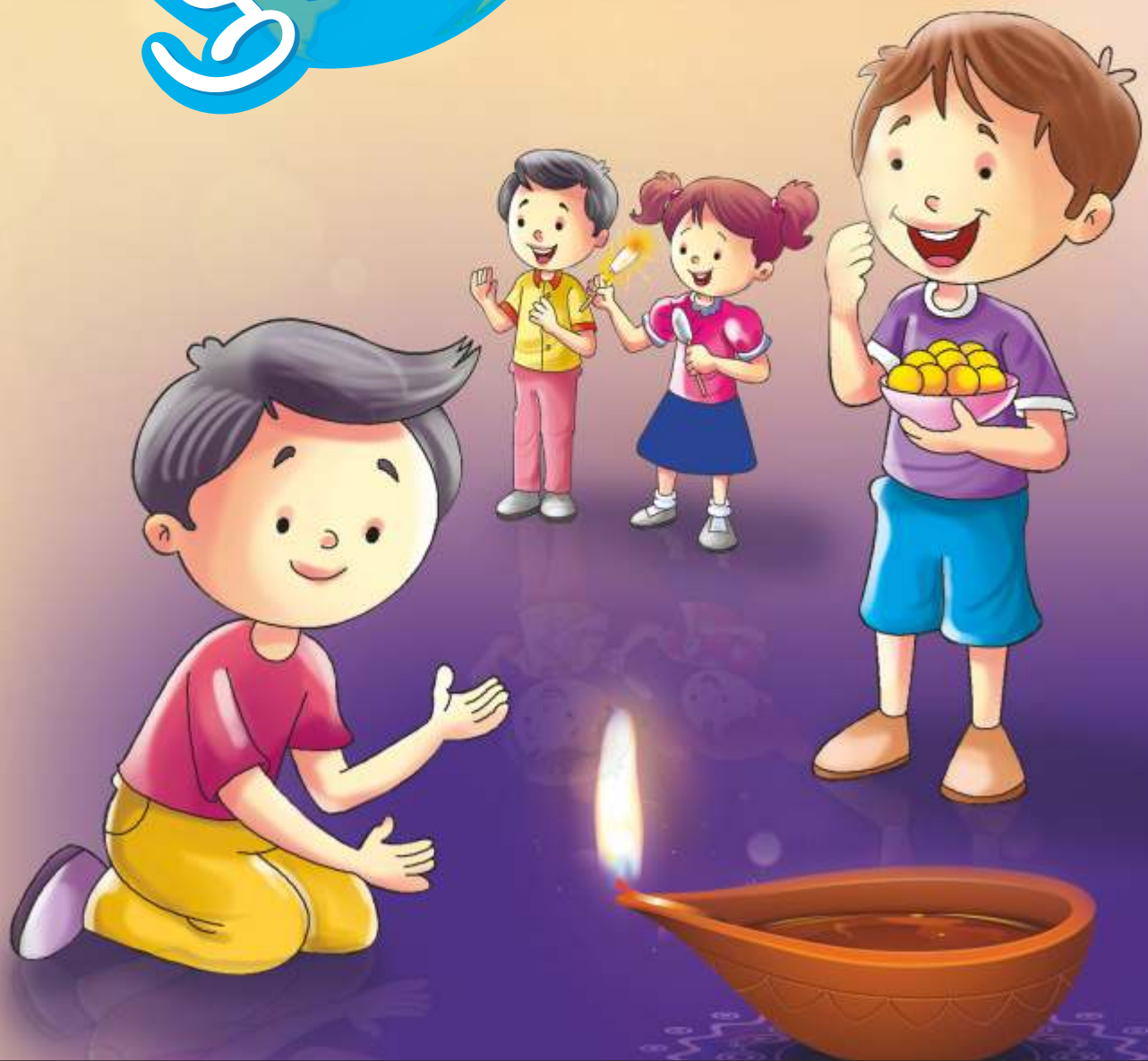

हँसती दुनिया

● वर्ष 44 ● अंक 10 ● अक्टूबर 2017 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries

Equivalent to U·S· Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
12. समाचार
20. वर्ग पहेली
26. पहेलियां
46. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

चित्रकथाएं

14. दादा जी
36. किट्टी

मुखपृष्ठ : निरंकारी आर्टग्रुप

कविताएं

13. विजयादशमी यही सिखाती
: डॉ. देशबन्धु 'शाहजहाँपुरी'

19. चलो ज्योति की ओर
: भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'

23. दीपों की पंक्ति दीवाली
: हरजीत निषाद

35. फुलझड़ियों–सी खिले हँसी
: डॉ. हरीश निगम

45. बापू प्यारे
: गोविन्द भारद्वाज

45. लाल बहादुर शास्त्री
: हरजीत निषाद

विशेष / लेख

18. मानव विकास की नई प्रजाति : होमो नलेदी
: कमल सोगानी

24. क्या खाते–पीते हैं अंतरिक्ष में यात्री
: मीना

29. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमण्डीलाल अग्रवाल

30. उपयोगी है पीपल
: सीताराम गुप्ता

40. फेरी लंगूर
: डॉ. परशुराम शुक्ल

कहानियां

8. अभिषेक की दीवाली
: डॉ. सेवा नन्दवाल

21. तीन मूर्तियां...?
: दिनेश दर्पण

22. वही पेड़
: महेन्द्र सिंह शेखावत

27. खुशी का भेद
: राजेन्द्र परदेसी

31. वृक्षों का जीवन मंत्र
: खजी भाई काचा

43. व्यवहार–कुशलता का पुरस्कार
: अभय कुमार जैन

उचित विधि अपनाएं

अध्यापक अपनी नई कार में स्कूल पहुँचे। सभी सहयोगियों ने उनको शुभकामनाएं दीं। जब अध्यापक कक्षा में पहुँचे तो बच्चों ने भी अपने अध्यापक जी को शुभकामनाएं दीं।

एक विद्यार्थी ने जिज्ञासावश पूछा– सर! आपके पास नई गाड़ी है, फिर भी आज आप स्कूल देर से पहुँचे।

अध्यापक बोले– हर कार्य एवं कर्म की एक विधि होती है और यह विधि पर निर्भर करता है कि उसका फल कैसा होगा? अगर विधि ठीक है तो सफलता निश्चित है और अगर विधि ठीक नहीं तो असफलता भी निश्चित ही है। विधि का अर्थ होता है तरीका, कार्य करने का ढंग। मेरा घर स्कूल के समीप है फिर भी मैंने कार का इस्तेमाल किया। मैंने सोचा कि अभी समय है बाज़ार की ओर से घूमकर चलता हूँ इसलिए मैं लेट हो गया। मेरा उद्देश्य (स्कूल में समय पर पहुँचना) उचित होने के बाद भी मेरा तरीका ठीक नहीं रहा। समयानुसार उचित कार्य करना ही उचित विधि है। हर कार्य की विधि अलग होती है। समयानुसार उसका चुनाव हमें स्वयं करना होता है और उसी अनुसार हम अपने कर्म के परिणाम को तय करते हैं।

प्यारे साथियों! हम भी अपने कार्य अपनी–अपनी विधि एवं तरीके से करते हैं और उसका परिणाम भी पाते रहते हैं। इसका सीधा प्रभाव हमारी सोच–विचार पर पड़ता है। जब हम सफल हो जाते हैं तो हमारी विधि ठीक है या हमने जो किया, वह ठीक है। जब कभी हमारी इच्छानुसार परिणाम नहीं आया तो हम अपने कर्म को, अपनी विधि को विधाता के साथ जोड़कर अपना पल्ला झाड़ लेते हैं। वास्तव में हमारे हाथ में ही विधि है। करने वाले भी हम हैं और अपनी सफलता या असफलता के विधाता भी हम ही हैं। हम अपने स्वार्थवश, अज्ञानवश या अहंकारवश होकर कर्म तो अवश्य करते हैं लेकिन साथ ही साथ उस कार्य के कर्ता भी बने रहते हैं। जब तक हम कर्ता रहेंगे, हम उस कर्म के साथ बंधे रहेंगे। कर्म के साथ बंधे रहने या जुड़े रहने से हमें सफलता या असफलता प्राप्त होती है।

महान आविष्कारक थॉमस एडीसन ने बार–बार असफल होने के बाद भी हार नहीं मानी बल्कि नये रास्ते, नई विधि से बिजली की खोज करते रहे। अन्ततः वे सफल हुए और आज उनकी इस महान खोज के कारण उत्पन्न विद्युत से हम सभी प्रकाशमय हैं। असफलता भी सफलता का कारण बन सकती है। असफल होने के बाद अगर हम उस रास्ते को बदलकर नये रास्ते को खोज लें और हार न मानें।

आईए, हम भी उचित विधि द्वारा अपने विधाता बनें और स्वीकार भी करें।

– विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 159

रुक्खी सुक्खी भैड़ी चंगी जे कोई प्राणी खांदा ए।
उसदा खाधा सभ पवित्तर जे ओह नाम ध्यांदा ए।
पाटे लीड़े गल विच पावे जुत्ती पैर न पांदा ए।
उसदा पाणा खाणा चंगै गुण जो हर दे गांदा ए।
चंगा चोखा है धन वाला चंगा खाणा पीणा ए।
जे न याद करे इस प्रभ नूं धृग धृग उसदा जीणा ए।
चंगा खावे पीवे पहने हो जाये दूणा तीणा ए।
धृग धृग उसदा खाधा पीता जे कर नाम तों हीणा ए।
इक छिन इक पल वेख प्रभु नूं गीत एहदा जिस गाया ए।
कहे अवतार सुणो रे सन्तो काल बीच न आया ए।

भावार्थ :

उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि भले ही कोई इन्सान रूखा–सूखा खाकर अपना जीवनयापन करता है लेकिन यदि वह परमात्मा का सुमरिण करता है तो उसका खाना–पीना सब पवित्र है। इन्सान के शरीर पर भले ही फटे–पुराने वस्त्र हों, पैरों में जूते भी न हों तो भी यदि वह परमात्मा के गुण गाता है तो उसका खाना–पीना सब अच्छा है। इसके विपरीत इन्सान अच्छा खाता–पीता हो और बहुत धन–सम्पदा भी उसके पास हो लेकिन यदि वह परमात्मा के गुण नहीं गाता, इस प्रभु को याद नहीं करता तो उसका जीना धिक्कार योग्य है। अच्छा खाने–पीने वाला अगर दुगुना–तिगुना धन वाला भी हो जाए तो भी इस ईश्वर परम अस्तित्व की जानकारी के बिना उसका अच्छा खाना–पीना सब धृगाकार योग्य है।

बाबा अवतार सिंह जी इन्सान की इन समस्याओं का सुन्दर समाधान करते हुए कह रहे हैं कि सन्तजनों सद्गुरु की कृपा से एक क्षण में ही इस निराकार–प्रभु के दर्शन हो जाते हैं। एक पल, एक क्षण भी इसे देखकर जिसने इस प्रभु के गुण गाये हैं वह काल के चक्र में नहीं फंसा, वह जन्म–मरण के चक्र से हमेशा के लिए मुक्त हो गया।

बाबा अवतार सिंह जी इन्सान के लिए परमात्मा की प्राप्ति और इसके गुण गाने को सुन्दर खान–पान, रहन–सहन तथा तमाम धन–वैभव होने से भी श्रेष्ठ बताते हुए सदैव इस हरि–परमात्मा के गुण गाने की प्रेरणा दे रहे हैं।

अनमोल

- ★ भक्त कभी भी स्वयं को गुरु से श्रेष्ठ नहीं मानता।
- ★ सभी इन्सानों में प्रभु का नूर देखकर सभी से प्यार करो, सबके भले की कामना करो।
- ★ परमात्मा सदैव एकरस है तथा इसे जानने से हमारे जीवन में भी एकरसता आ जाती है।
- ★ सत्संग मन की खुराक है इसके बिना मन में कमजोरी आ जाती है। इसलिए आत्मिक शक्ति के लिए सत्संग जरूरी है।
- ★ अपनी दृष्टि को ऐसा विशाल बनाओ जिससे दूसरों के दोष दिखाई न दें।
- ★ यदि आप किसी सन्त महात्मा को सद्गुरु स्वरूप समझकर सेवा सम्मान करते हैं तो उसकी रसना से जो आशीर्वाद निकलता है, उसमें गुरु शामिल होता है।

– बाबा अवतार सिंह जी

- ★ मन की शान्ति के लिए, शान्ति के श्रोत प्रभु से जुड़ना जरूरी है।
- ★ सुख अध्यात्म में है सांसारिक पदार्थों में नहीं।
- ★ प्रभु का दान मिलता रहेगा तो यह मन शान्त रहेगा।
- ★ दूसरों का घर उजाड़कर अपना घर रोशन नहीं किया जा सकता।
- ★ मन गुरु को समर्पित करने वाले ही मुक्ति का आनन्द ले पाते हैं।
- ★ यदि मनुष्य को सुखी जीवन बिताना है तो सत्संग तथा सुमिरण करें।
- ★ मनुष्य जैसी संगत में रहेगा वैसा ही बन जायेगा।
- ★ सत्य केवल परमात्मा ही है।
- ★ ईश्वर और मनुष्य के बीच की कड़ी सद्गुरू है।
- ★ सदा सज्जनों की संगति करो।

– निरंकारी राजमाता जी

वचन

- ☆ जो हाथ सेवा के लिए उठते हैं। वे प्रार्थना करने वाले होठों से अधिक पवित्र हैं।
- ☆ आनन्द वो ही प्राप्त करता है जो अपने मन को इस सत्य के साथ जोड़े रखता है।
- ☆ सन्तों की ऊँची मत ले लो जीवन की चाल सुन्दर हो जायेगी।
- ☆ ठीक सुनकर मानना और उसके अनुसार चलना आ जाये तो वाकई हम लाभान्वित होते हैं।
- ☆ संसार में घृणा से अधिक शक्तिशाली प्रेम और क्षमा ही हैं।
- ☆ ज्ञान और कर्म के संगम से ही पृथ्वी स्वर्ग बनेगी।

– बाबा हरदेव सिंह जी

☆ अक्सर हम अपनी बड़ी से बड़ी गलतियां भी नज़रअंदाज कर देते हैं। अगर हमने गलतियां नज़रअंदाज करनी हैं तो दूसरों की करें और अपनी गलतियों को सुधारें। जब यह भाव अपनायेंगे तब मिशन का प्रत्येक गुरसिख प्यार व मिलवर्तन की जीती–जागती तस्वीर बन पायेगा। हर गुरसिख अपने आप में एक चलता–फिरता मिशन बन पायेगा। बाबा अवतार सिंह जी ने जिस मिशन की कल्पना की थी वह तभी साकार हो पायेगा जब हम यह भाव अपनायेंगे।

– सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी

–संग्रहकर्ता : श्रीराम प्रजापति

कहानी : डॉ. सेवा नन्दवाल

अभिषेक की दीवाली

दीवाली की छुट्टियों के बाद विद्यालय पुनः प्रारम्भ हुए तो सारे विद्यार्थीगण प्रसन्नचित लगे। दीवाली की खुशी उनके चेहरे पर बिखरी हुई थी। उनकी बातचीत का एक ही विषय था– दीवाली। किसने कितनी आतिशबाजी की, कितनी मिट्ठाई खाई, कितने नये कपड़े बनवाए। कौन–सी चीज खरीदी। घर की सजावट किस तरह से की आदि–आदि।

कक्षा अध्यापक आनन्द सर के दाखिल होते ही नवीं कक्षा के सारे विद्यार्थियों ने खड़े होकर उनका अभिनन्दन किया। आनन्द सर के हाथों में एक छोटा–सा पैकेट था। उसे दिखाते हुए वे पूछने लगे– बच्चों बता सकते हो इसके अन्दर क्या होगा? विद्यार्थी अनुमान लगाने लगे। आनन्द सर मुस्कुराते हुए बोले– जो भी हो लेकिन यह तोहफा उसी को मिलेगा जो हमारे सवाल का उचित जवाब देगा।

विद्यार्थीगण सवाल जानने को उत्सुक हो उठे। –सवाल बताइए सर– रौनक ने पूछ लिया।

आनन्द सर मुस्कुरा पड़े– तुम्हें यह बताना है कि तुमने दीवाली कैसे मनाई?

यह तो बड़ा आसान सवाल है सर– जयश्री ने मुस्कुराते हुए कहा।

ब्रजेश तत्परता से बोल पड़ा– सर मैं इसका उत्तर बताऊँ।

–उत्तर तो सभी को बताना है क्योंकि दीवाली सभी ने मनाई होगी। लेकिन इस तरह मौखिक रूप से नहीं बल्कि लिखकर और वह भी कम शब्दों में तथा इसी पीरीयड के अन्दर– आनन्द सर ने बताया।

सारे विद्यार्थीगण सिर झुकाकर उत्तर लिखने में व्यस्त हो गए। जैसे ही पीरीयड खत्म होने की घंटी बजी आनन्द सर ने पेपर इकट्ठे कर लिए।

गायत्री ने पूछ लिया– सर इसका परिणाम कब बताएंगे?

–मध्यांतर के बाद मेरा एक पीरीयड और है, परिणाम और पुरस्कार उसी में– आनन्द सर ने कहा और कक्षा से बाहर निकल गये।

–मध्यांतर के बाद के पीरीयड में आनन्द सर जब कक्षा में आए तो बच्चों में परिणाम जानने की व्यग्रता थी।

रूपाली ने कहा– सर, परिणाम बताइए।

–पुरस्कार किसे मिल रहा है?– गगन ने पूछ लिया।

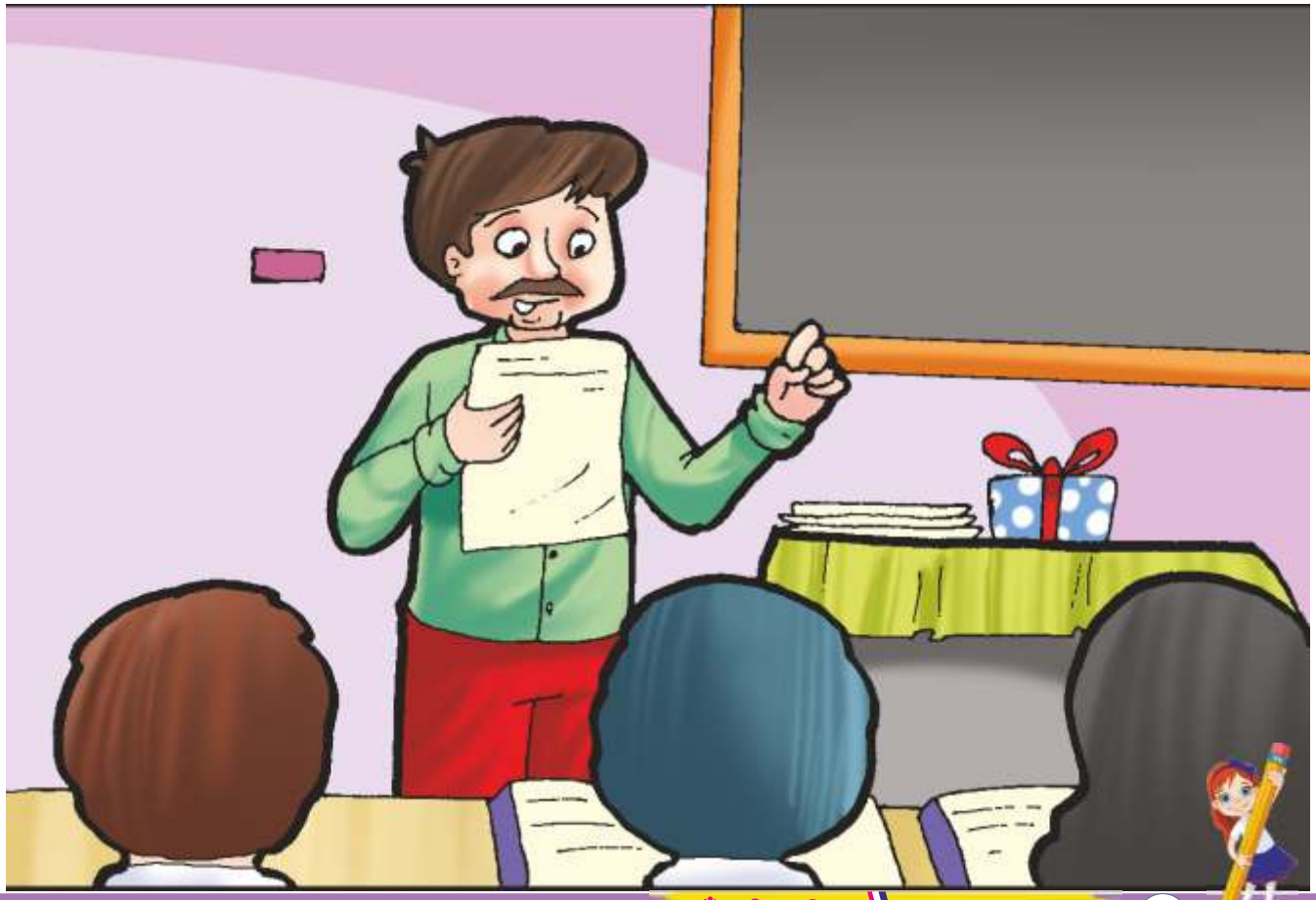

–यह पुरस्कार उसे मिलेगा जिसने दीवाली सबसे अच्छी तरह से मनाई होगी यानि दीवाली के त्यौहार को सार्थक किया होगा– आनन्द सर मुस्कुराते हुए बोले।

–कौन विजेता है सर बताइए न?– पिंकी ने आग्रहपूर्वक पूछा।

–देखो भाई यह तो अभी हमने निश्चित नहीं किया। ऐसा करते हैं पहले तीन अच्छे उत्तर पढ़ते हैं फिर देखते हैं उनमें से किसका अच्छा उत्तर है। इसलिए सब बच्चे ध्यानपूर्वक सुनेंगे।– आनन्द, सर ने कहा। सारे बच्चे शान्तचित्त होकर बैठ गए।

–पहला उत्तर सुनिए– आनन्द सर ने पेपर हाथ में उठाते हुए कहा।

–किसका है सर?– ब्रजेश ने पूछा।

–नहीं अभी नाम किसी का नही बताएंगे। पहला उत्तर इस तरह है...

''मेरे पापा ने मुझे तीन सौ रुपये के पटाखे खरीदकर दिए थे। मैंने उन पटाखों को अकेले नहीं जलाया और न ही अपने दोस्तों को दिए क्योंकि उनके पास पहले ही बहुत सारे पटाखे थे। मैंने आधे पटाखे झोपड़पट्टी में रहने वाले गरीब बच्चों में बाँट दिये। मैं चाहता था कि इस पावन पर्व पर दूसरों को खुशियां बांट सकूं।''– इतना कहकर आनन्द सर चुप हो गए। फिर उन्होंने दूसरा पेपर हाथ में उठाया।

–दूसरा उत्तर इस प्रकार है कि–'मेरे पापा दो सौ रुपये के पटाखे दिलाने वाले थे। मैंने सिर्फ पचास रुपये के पटाखे अपने लिए खरीदे। बाकी के डेढ़ सौ रुपये को उन तीन घरों में जाकर पचास–पचास रुपये दे दिये जिनके पास दीए जलाने तक को पैसे नहीं थे और जिनके बच्चे ललचायी आँखों से इधर–उधर ताक रहे थे।'' दूसरा पेपर पढ़कर एक पल के लिए आनन्द सर खामोश हो गए। सारे विद्यार्थियों पर एक नज़र फिसलाते हुए उन्होंने अंतिम पेपर उठाया।

–तीसरा उत्तर इस तरह से है– 'हमारे घर जो बाई काम करने आती है उसका लड़का भी कभी–कभी साथ आया करता था और अपनी माँ का हाथ बंटाया करता था। मैंने सोचा कुछ पैसे देकर उनके घर दीप जला दूँ। फिर मैंने सोचा यह तो क्षणिक सहायता होगी। इससे उन्हें थोड़ी दूर की खुशी हासिल होगी और वे अपनी वर्तमान स्थिति से उबर नहीं पाएंगे। इसलिए मैंने सोचा क्यों न उनके घर का ज्ञान का दीपक जलाऊँ। इसलिए मैंने उस लड़के को पढ़ाना शुरू कर दिया। अपने दीवाली के पैसों से मैंने उसके लिए पुस्तकें, कापी, पैंसिल लाकर दी। इस तरह मैंने दीवाली का त्यौहार मनाया।''

सारे बच्चे चुपचाप सुन रहे थे। आनन्द सर ने उनकी एकाग्रता भंग कर के उनसे पूछा– तुमने तीनों उत्तर सुने, अब ये बताओ इनमें से किस बच्चे ने सबसे अच्छी दीवाली मनाई? विद्यार्थीगण यहाँ–वहाँ देखने लगे।

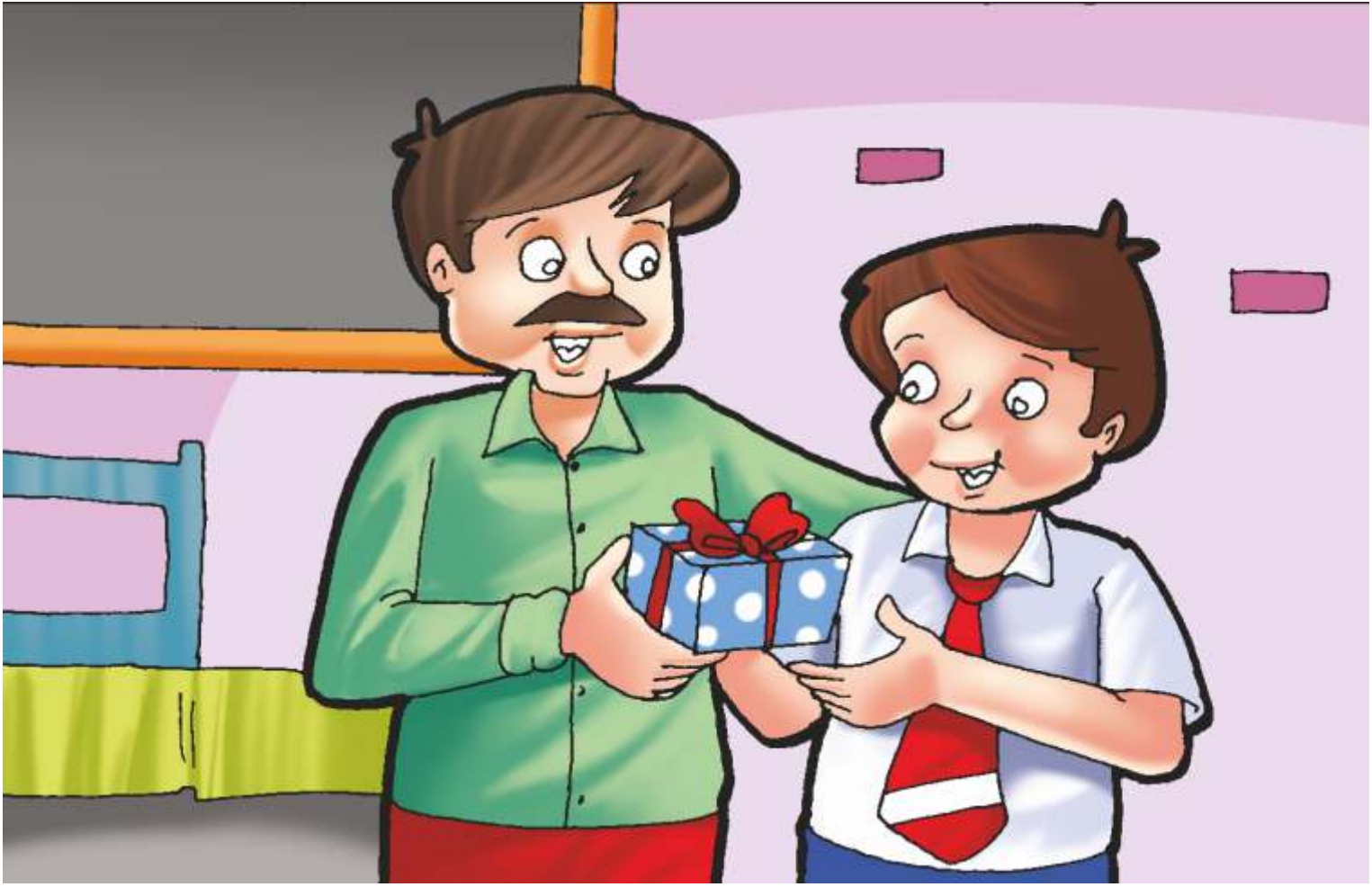

एक विद्यार्थी धीरे से फुसफुसाया– तीसरे ने। फिर सारे विद्यार्थी एक साथ बोल पड़े– तीसरे विद्यार्थी ने सर।

आनन्द सर मुस्कुराए– हाँ बिल्कुल ठीक कहा। इस तीसरे विद्यार्थी ने दीवाली को सार्थक कर दिया। इसलिए पुरस्कार का हकदार वही है। यहाँ–वहाँ देखते हुए अनुराग ने पूछ लिया– कौन है सर वह?

–वह है अभिषेक।

–चलो अभिषेक इधर आओ और पुरस्कार हासिल करो।– आनन्द सर ने कहा।

सकुचाता हुआ अभिषेक उठ खड़ा हुआ। सारे बच्चों ने तालियाँ बजाकर उसका उत्साहवर्धन किया।

–शाबाश बेटे, यह लो– अभिषेक की पीठ थपथपाते हुए आनन्द सर ने वह पैकेट उसके हाथ में थमा दिया।

माया ने पूछ लिया– इसमें क्या है सर?

आनन्द सर ने मुस्कराते हुए कहा– इसमें ज्ञान का दीपक जलाने का हथियार है। नहीं समझे? इसमें एक पेन है।

अभिषेक ने झुककर आनन्द सर के पैर छू लिये। विद्यार्थियों ने एक बार फिर जोरदार तालियां बजाकर अभिषेक का अभिनन्दन कर दिया।

शनि के चंद्रमा 'टाइटन' पर मिलीं घाटियां

वॉशिंगटन। नासा के कैसिनी अंतरिक्ष यान ने शनि के चंद्रमा 'टाइटन' पर सैकड़ों मीटर गहरी घाटियों का पता लगाया है। इन घाटियों में तरल हाइड्रोकार्बन भरा होने का अनुमान है। नासा ने बताया कि इससे टाइटन पर तरल पदार्थ से भरे चैनलों की मौजूदगी का पहला सीधा संकेत मिलता है। साथ ही यह गहरी घाटियों का पहला निरीक्षण भी है। वैज्ञानिकों ने जिन आंकड़ों का अध्ययन किया है वह कैसिनी ने मई 2013 में टाइटन के बेहद करीब से गुजरते हुए लिए थे। इस दौरान कैसिनी के रडार उपकरण ने उन चैनलों पर खुद को केंद्रित किया था जो उत्तरी सागर 'लिजिया मेर' से बाहर निकली थीं।

अध्ययन में पाया गया कि चैनल संकरी घाटियां हैं जिनकी चौड़ाई एक किलोमीटर से कम है। ये घाटियां 40 डिग्री का झुकाव लिए हुए हैं। गहराई नापे जाने पर पता चला कि कुछ घाटियां तो ऊपर से नीचे तक 240 मीटर से 570 मीटर तक गहरी हैं। रडार से लिए गए चित्रों में शाखाओं में बंटे चैनल उसी तरह गहरे रंग के नजर आ रहे हैं जैसे टाइटन के मिथेन वाले समुद्र नजर आते हैं। इससे संकेत मिलता है कि चैनल भी तरल पदार्थ से भरे होंगे लेकिन अब तक तरल पदार्थ की मौजूदगी के बारे में स्पष्ट पता नहीं चला है। (भाषा)

– संग्रहकर्ता : बबलू कुमार

बाल कविता : डॉ. देशबन्धु 'शाहजहाँपुरी'

विजयादशमी यही सिखाती

माता–पिता का कहना मानो,
कठिनाई से लड़ना जानो।
भाग जाएगी हर बाधा तब,
डरा डरा जो तुम्हें सताती।
जीत सदा होती है सच की,
विजयादशमी यही सिखाती।

मन के अन्दर पनप रहा जो,
कुविचारों का रावण है वो।
बाहर फेंक, फूँक दो उसको,
कथा राम की यही बताती।
जीत सदा होती है सच की,
विजयादशमी यही सिखाती।

मन में जो संकल्प करो तुम,
प्रतिपल उस पर अडिग रहो तुम।
हर सपना तब पूरा होगा,
हमको दीदी यह समझाती।
जीत सदा होती है सच की,
विजयादशमी यही सिखाती।

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन

अजय कालड़ा

सराय
व्यापारी ने रात शहर में ही एक सराय में गुजारने की सोची और वह एक सराय के दरवाजे पर जा पहुँचा।
व्यापारी सराय का दरवाजा खुलवाने के लिए वह जोर-जोर से दरवाजा खड़काने लगा।
बहुत देर बाद अन्दर से सराय के चौकीदार ने कहा- मुझे खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि दरवाजे की चाबी खो गई है। अब केवल चाँदी की चाबी से ही दरवाजा खुलेगा।

व्यापारी समझ गया कि चौकीदार क्या चाहता है। उसने दरवाजे के नीचे से चाँदी का एक सिक्का अन्दर पहुँचा दिया।
सिक्का पहुँचते ही दरवाजा खुल गया और व्यापारी अन्दर आ गया।
अन्दर आते ही व्यापारी ने चौकीदार से बाहर से खाना लाने को कहा और चौकीदार उनके लिए खाना लेने बाहर चला गया।
चौकीदार के बाहर जाते ही व्यापारी ने अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया।

चौकीदार खाना लेकर वापस आया और दरवाजा बन्द देख जोर-जोर से दरवाजा पीटने लगा।
तभी अन्दर से आवाज़ आयी कि ये दरवाजा चाँदी की चाबी के बिना नहीं खुलेगा।
और चौकीदार को वह चाँदी का सिक्का वापस लौटाना पड़ा।
तो बच्चों! 'जैसे को तैसा' कभी न कभी मिलता ही है। चाहे वह स्वाभाविक रूप में मिले या अस्वाभाविक रूप में। पर मिलता जरूर है।

जानकारी : कमल सोगानी

मानव विकास की नई प्रजाति : होमो नलेदी

यह बात सौ फीसदी सत्य है कि किसी जमाने में हमारे पूर्वज एक तरह के जंगली बन्दर ही थे। बदलती जलवायु और समय के उतार–चढ़ाव के साथ इन बन्दरों में काफी बदलाव आया। इनमें सोचने–समझने की बुद्धि जाग्रत होने लगी। ये संयुक्त रूप से अपनी रक्षा के लिए किसी गुफा, पेड़ों के बड़े–बड़े खोखल व खंडहर स्थानों पर रहने लगे तो कुछ घास–फूस से झोपड़ियां भी बनाने लगे। एक दूसरे के प्रति सुख–दुख बांटने लगे। जब समय सभ्यता के साथ–साथ आगे बढ़ा तो इन्होंने अपने रहने और खाने–पीने के तौर तरीकों में भी बदलाव किया। पीढ़ी दर पीढ़ी जो सन्तानें हुईं, उनमें निरन्तर कुछ न कुछ बदलाव आता रहा और एक समय ऐसा भी आया जब ये बन्दर एक मानव के रूप में दिखाई देने लगे। इनकी अपनी आवश्यकताएं बढ़ती गई और उन्हें पूरा करने के लिए ये श्रम करने लगे। गाय, भैंस, बकरी पालकर उनका दूध निकालने लगे, खेती करने लगे, उससे उपजे अनाज की रोटी बनाकर खाने लगे।

आपको जानकर अचरज होगा। हाल ही में जोहान्सबर्ग के वैज्ञानिकों ने दक्षिणी अफ्रीका में इन्सानों की नई प्रजाति खोजी है। यह प्रजाति वानर और मनुष्यों के बीच की 30 लाख साल पुरानी है। वैज्ञानिकों ने नई प्रजाति को ''होमो नलेदी'' नाम दिया है।

वैज्ञानिकों को जोहान्सबर्ग से 50 किलोमीटर दूर घने जंगलों में दबी–छिपी गुफाओं में दफन 15 नरकंकालों में यह प्रजाति मिली। इस प्रजाति के दो पांव पर चलने वाले प्राचीन वानर और मनुष्य के बीच एक 'पुल' के तौर पर देखा जा सकता है।

हाँ, 'होमो नलेदी' का मस्तिष्क वर्तमान मनुष्य के दिमाग से आधा है। लगभग एक औसत संतरे के आकार जितना। गुफा में खुदाई के वक्त लगभग 1000 अवशेष मिले हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार नलेदी प्रजाति के ही 15 नवजात बच्चे और वयस्कों के कंकालों के हिस्से हैं। इनकी लम्बाई 5 फीट और वजन 45–50 किलो के लगभग है। इस सन्दर्भ में वैज्ञानिकों का दावा है कि यह अद्‌भुत खोज इन्सान के पूर्वज को लेकर पुरानी सोच को बदलकर रख देगी।

इस सन्दर्भ में वैज्ञानिक ली बर्गर का कहना है– यह होमो परिवार (मनुष्य का विकास क्रम) में एक नया अध्याय जोड़ देगा क्योंकि यह प्रजाति बहुत ज्यादा हमारे जैसी नहीं दिखती। यह कई प्रजातियों का मिश्रण है। इसकी खोपड़ी, दांत और हाथ बहुत कुछ ''होमो जीनस'' जैसे दिखते हैं। कंधे मजबूत हैं और औसतन कुछ चौड़े हैं। दांत सवा इंच लम्बे और इतने ही चौड़े हैं, एक तरह से ''ऑस्ट्रालों पिथिकस अफेन्सिस'' जैसे। इनकी खोपड़ी ''होमो इरेक्टस'' जैसी है जिसका मस्तिष्क काफी छोटा है। मजबूत अंगूठा और घूमने लायक कलाई बहुत कुछ आज के मनुष्य जैसी।

एक अन्य वैज्ञानिक क्रिस स्ट्रिंगर ने ''नलेदी'' को अहम खोज का दर्जा दिया है। दरअसल इस खोज से यह साबित होता है– पुरातन काल में इन्सानों की भी कई तरह की प्रजातियां थीं।

मनुष्यों के विकास का अन्तिम छोर क्या है? यह रहस्य भी अब शायद शीघ्र ही उजागर हो जाएगा।

कविता : भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'

चलो ज्योति की ओर

दीपों का त्योहार अहा! फिर प्यार लुटाने आया है।
जन–जीवन में शभु प्रकाश के फूल खिलाने आया है।।

खिली–खिली हैं सभी दिशायें,
हँसती हुई बहारें हैं,
वन–उपवन में, सबके मन में,
खुशियों के फौवारे हैं,
'चलो ज्योति की ओर' मंत्र यह कण–कण ने फिर गाया है।
दीपों का त्योहार अहा! फिर प्यार लुटाने आया है।।

ज्योतिपर्व का मर्म छिपा है,
मन की ज्योति जगाने में,
सत्य–न्याय के शुभाचरण को,
पल–प्रतिपल अपनाने में,
जो भी जिया दिया–सम जग में, मान उसी ने पाया है।
दीपों का त्योहार अहा! फिर प्यार लुटाने आया है।।

चलो, दीप हम वहीं जगाएं,
अब भी जहाँ अंधेरा है,
सुख के मोती वहाँ उगाएं,
जहाँ दुखों का डेरा है,
यही सुखद सन्देश पर्व यह मानवता हित लाया है।
दीपों का त्योहार अहा! फिर प्यार लुटाने आया है।।

श्रम के खिलें अनार, फुलझड़ी,
छूटे शुभ सद्भावों की,
मिट जाये अंधियारी सारी,
जन–मन से दुर्भावों की,
सबको यही सुपथ दीपक ने जलकर स्वयं दिखाया है।
दीपों का त्योहार अहा! फिर प्यार लुटाने आया है।।

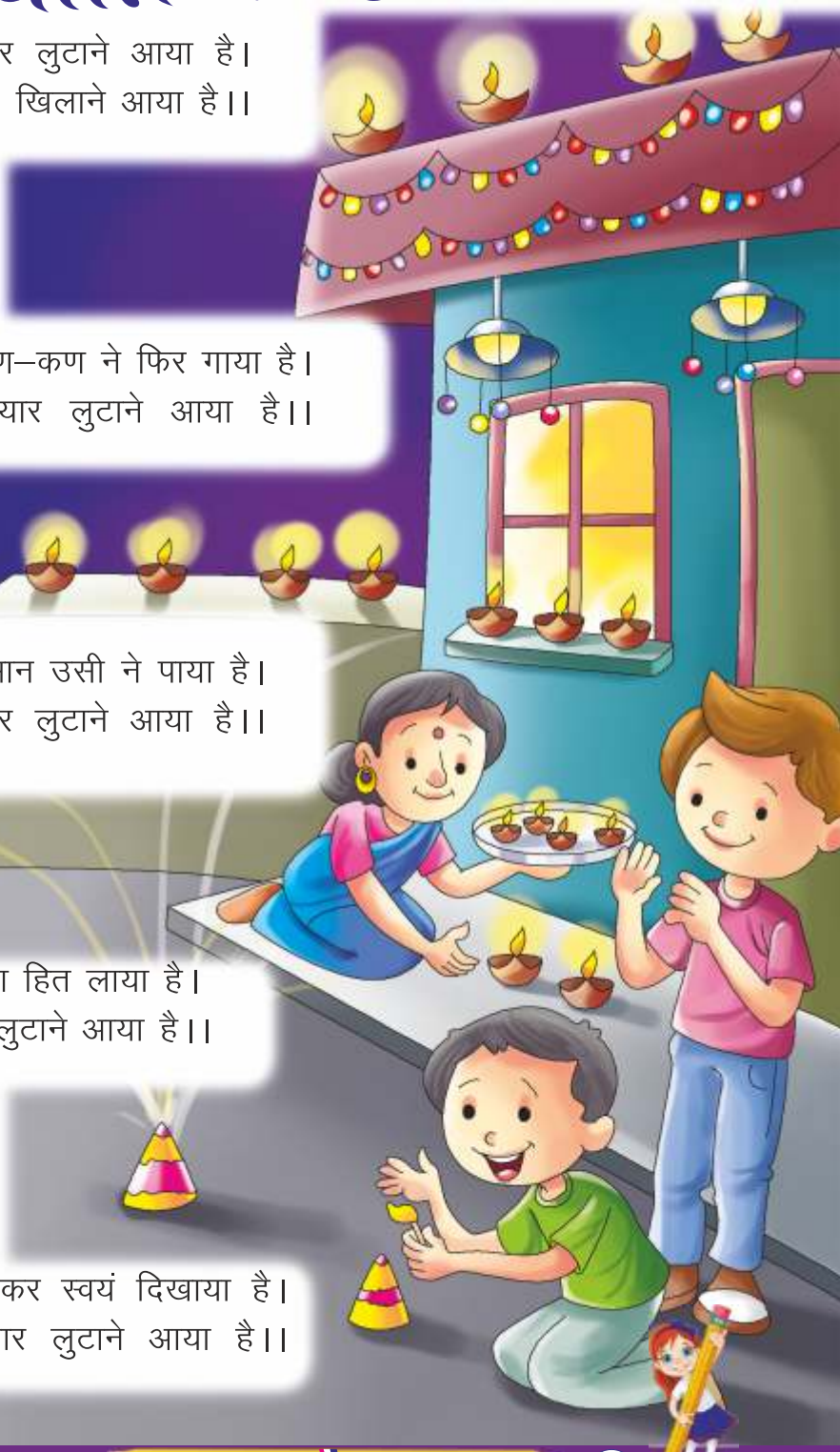

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

वर्ग पहेली

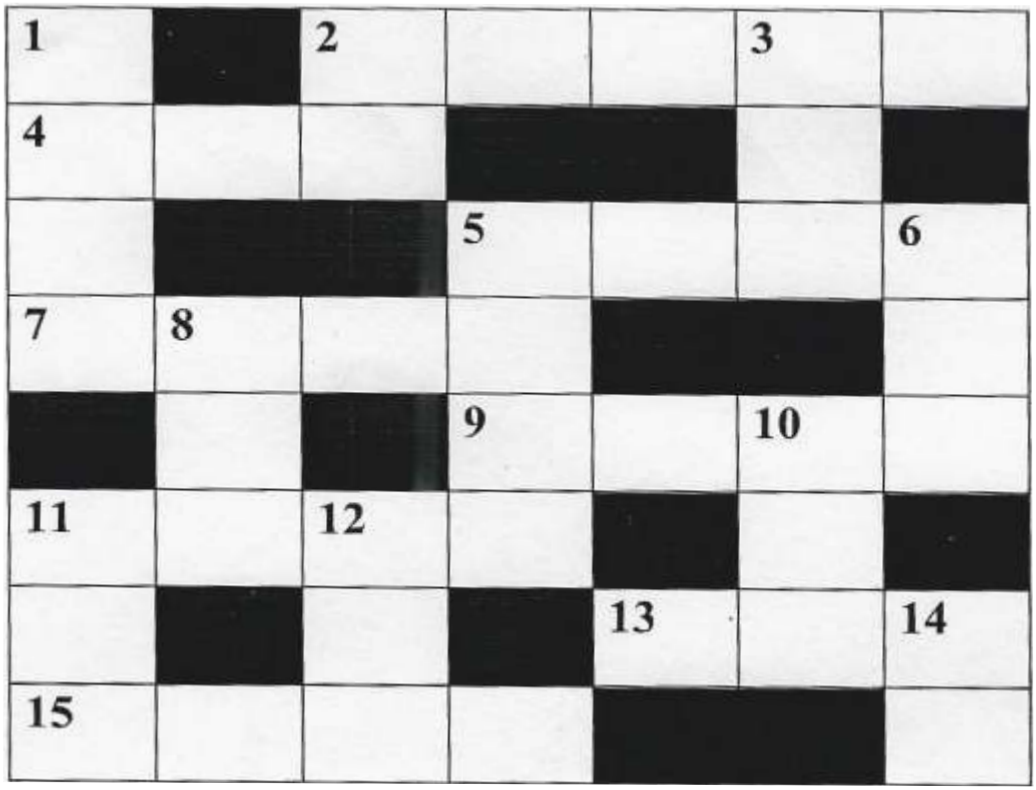

बाएं से दाएं →

2. स्वतंत्रता सेनानी जयप्रकाश नारायण को ..... के उपनाम से भी जाना जाता है (लोकमान्य/लोकनायक)।
4. अमरीका के उपराष्ट्रपति का नाम .... पेंस है।
5. 'मेघदूत' के लेखक?
7. शुद्ध शब्द छांटिए : लहसुन/लहसून।
9. भारत में शामिल किए जाने से पूर्व गोवा राज्य ... देश का उपनिवेश था।
11. सूरज का एक पर्यायवाची शब्द।
13. सीताजी की तलाश में समुद्र पार करते समय भक्त हनुमान का सामना जिस राक्षसी से हुआ था।
15. सौ से तीन कम।

ऊपर से नीचे ↓

1. शिमला ..... प्रदेश की राजधानी है।
2. भारत के प्रधानमंत्री के निवास का नाम 7, रेसकोर्स रोड से बदलकर 7, ... कल्याण मार्ग कर दिया गया है।
3. भगवान श्रीकृष्ण का पालन पोषण करने वाली माता का नाम?
5. उत्तर प्रदेश का एक औद्योगिक नगर जहाँ प्रसिद्ध जे. के. मन्दिर स्थित है?
6. सलिल और वाचाल में से जो पानी का एक पर्यायवाची शब्द है।
8. सूजी या आटे को घी में भूनकर चीनी के साथ पकाया गया एक पकवान?
10. ..... में सागर भरना यानि थोड़े शब्दों में बहुत कुछ कहना।
11. हर साल 14 नवम्बर को बाल .... के रूप में मनाया जाता है।
12. सिर पर ..... बांधना यानि मरने को तैयार रहना।
14. ओलम्पिक खेलों में कुश्ती में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला ..... मलिक है।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में हैं)

कथा पहेली : दिनेश दर्पण

तीन मूर्तियां...?

उस समय अवन्तिका नगरी (उज्जैन) में राजा विक्रमादित्य का शासन था। एक दिन उनके समक्ष एक मूर्तिकार धातु की तीन मूर्तियां लेकर उपस्थित हुआ। उसने राजा से कहा– ''महाराज! इन मूर्तियों की कीमत के बारे में सही निर्णय चाहता हूँ। न्यायप्रियता के लिए आपका नाम मैंने बहुत सुना है। इसलिए मैं आपके समक्ष उपस्थित हुआ हूँ। कृपया आप इन तीनों मूर्तियों की कीमत का सही निर्णय करने की कृपा करें।''

राजा विक्रमादित्य ने मूर्तियों को देखा। तीनों मूर्तियां– रंग–रूप, आकृति व वजन में हू–बू–हू एक जैसी थीं। इसलिए राजा ने विचार किया। इनकी कीमत भी एक समान ही होनी चाहिए। इस पर विचार करने के बाद राजा ने उन तीनों मूर्तियों की कीमत एक जैसी होने का निर्णय लिया और अपने विचार व्यक्त कर दिये। दरबार में अनेक लोगों ने मूर्तियों को देखा–परखा, जांच–परख की और अपनी–अपनी राय व्यक्त की। पर मूर्तिकार किसी के भी निर्णय से संतुष्ट नहीं हुआ। जब राजा ने यह सब देखा तो मूर्तियों का मूल्य निर्धारण करने की जिम्मेदारी कालीदास को सौंप दी।

कालीदास ने एक सींक ली और पहली मूर्ति के कान में डाली तो वह दूसरे कान से बाहर आ गई। दूसरी मूर्ति के कान में सींक डाली तो वह मुँह से बाहर आ गई। तीसरी मूर्ति के कान में सींक डाली तो वह सीधे पेट में उतर गई। यह सब देखकर कालीदास ने बताया कि ''पहली मूर्ति की कीमत है तीन कौड़ी, दूसरी मूर्ति की कीमत है एक मुद्रा और तीसरी मूर्ति की कीमत है– एक सहस्र स्वर्ण मुद्राएं।''

कालीदास का निर्णय सुनकर लोगों की जिज्ञासा बढ़ गई वे इस पहेली का हल जानना चाहते थे। यह देखकर राजा विक्रमादित्य ने कालीदास से कहा– कविवर, इस अन्तर का कारण भी स्पष्ट कीजिये, ताकि लोगों की जिज्ञासा शांत हो सके।

कालीदास ने शांत और गंभीर होकर कहना शुरू किया– महाराज, ये तीनों मूर्तियां तीन प्रकार के मानव स्वभाव की प्रतीक हैं। एक कान से सुनकर दूसरे कान से बात निकाल देना निकृष्ट स्वभाव है। कान से सुनकर बोलने वाले वक्ता की बात पर मुँह से प्रशंसा के शब्द कहकर अपने कर्तव्य की पूर्ति मान लेना मध्यम स्वभाव है और कान से सुनकर खास बात को हृदय की गहराई में उतारना उत्तम स्वभाव है। इसी कारण नई तीनों एक जैसी दिखने वाली मूर्तियों की कीमत इनकी विशिष्टताओं के अनुरूप ही तय की गई है। कालीदास का उत्तर सुनकर राजा, मूर्तिकार और जनता सभी खुश हुए और उन्होंने कालीदास की बुद्धिमानी की बहुत प्रशंसा की।

बोधकथा : महेन्द्र सिंह शेखावत

वही पेड़

रामपुर गाँव में हरिराम नाम का एक किसान रहता था। हरिराम के खेत में फलों के पेड़ों का एक बाग था। उसके बाग में एक पेड़ को छोड़कर सारे ऐसे पेड़ थे जिनके फल लोगों के खाने के काम आते थे, किन्तु जो एक पेड़ था उसके फल न तो लोगों के खाने के काम आते थे और न ही पशुओं के खाने के काम आते थे।

कई बार गाँव के लोगों ने हरिराम से उस पेड़ को काटकर बाग से दूर फेंकने के लिए भी कहा किन्तु हरिराम उनसे यही कहता– कोई भी चीज बेकार नहीं होती। कभी न कभी तो काम आती है।

यही सोचकर वह सारे पेड़ों के साथ–साथ उस पेड़ की सिंचाई और परवरिश करता था।

एक दिन बरसात के मौसम में भारी वर्षा के कारण गाँव में भारी बाढ़ आ गई। पेड़–पौधे, पशु और मनुष्य सब बाढ़ के पानी में बहने लगे। बाढ़ के पानी में बहते हुए लोग चिल्ला रहे थे, बचाओ... बचाओ...।

तभी हरिराम को बहते हुए पानी में एक भारी पेड़ का कुछ भाग नजर आया। वह लपक कर उस पेड़ पर चढ़ गया और चिल्लाने लगा– इधर आओ... मेरी ओर इधर आओ... इस पेड़ को पकड़ो... इस पेड़ को पकड़ो...।

कई बहते हुए लोगों के हाथ पकड़–पकड़कर भी हरिराम ने उनको उस पेड़ पर चढ़ा दिया था। इस प्रकार कई लोगों के प्राण बच गये थे।

जब बाढ़ का पानी कम हुआ तो हरिराम ने देखा, यह वही पेड़ था, जिसे गाँव के लोगों ने काटकर फेंकने के लिए कहा था।

आज उसी पेड़ ने कई लोगों के प्राण बचा लिये थे। जब उन लोगों को उस पेड़ का पता चला तो सब पेड़ को देखते हुए नतमस्तक हो गये थे।

कविता : हरजीत निषाद

दीपों की पंक्ति दीवाली

दीपों की पंक्ति दीवाली।
लक्ष्मी की शक्ति दीवाली।
राम की भक्ति दीवाली।
जगमग है ज्योति दीवाली।

सच्चाई की रीत दीवाली।
अंधकार पर जीत दीवाली।
सफाई संग प्रीत दीवाली।
बुराई के विपरीत दीवाली।

दीप छटा न्यारी दीवाली।
मन की फुलवारी दीवाली।
लगती है प्यारी दीवाली।
महीनों की तैयारी दीवाली।

अंधकार से दूर दीवाली।
प्रकाश से भरपूर दीवाली।
अतिशी सुरूर दीवाली।
मनाएंगे जरूर दीवाली।

जानकारी : मीना

क्या खाते-पीते हैं अंतरिक्ष में यात्री

विज्ञान के तेजी से विकास के साथ यान में जाने वाले यात्रियों की तादाद में भी तेजी से वृद्धि हुई है। विज्ञान में रूचि रखने वाले जब इन अंतरिक्ष यात्राओं के बारे में सुनते–पढ़ते हैं तो उन्हें यह सहज जिज्ञासा होना स्वाभाविक ही है कि ये यात्री अंतरिक्ष में क्या खाते–पीते होंगे?

जब पहले भारतीय अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा ने सोयूज 11 यान से सेल्यूत 7 प्रयोगशाला में प्रवेश किया तो वहाँ पहले से मौजूद दो अंतरिक्ष यात्रियों ने उन्हें खाना खिलाने की पहले से तैयारी कर रखी थी। राकेश शर्मा को तब अंतरिक्ष में गर्मागर्म खाना खिलाया गया था।

आइये, अंतरिक्ष के भोजन के बारे में कुछ दिलचस्प जानकारी आपको दें :–

अंतरिक्ष यात्रियों के लिए जो भोजन सामग्री यान में रखी जाती है, वह ऐसी होती है, जो कम जगह घेरे, हल्की हो और सहजता से पच सके। साथ ही इस बात का भी ख्याल रखा जाता है कि वह खाद्य सामग्री ऐसी हो जो काफी समय तक रखी रहने पर भी खराब न हो और उसे खाया जा सके। इस बात का भी ख्याल रखा जाता है कि अंतरिक्ष यात्री जिन चीजों को खाने–पीने का आदी है, उसी से बनी सामग्री रखी जाती है, ताकि शरीर उन्हें आसानी से पचा सके। आमतौर पर नयी चीज को शरीर वहाँ पर एकदम पचा नहीं पाता है।

खाना खाने के वास्ते अंतरिक्ष में चाकू या छुरी का उपयोग नहीं हो सकता है, इसलिए सभी चीजों को छोटे आकार में तैयार किया जाता है, ताकि खाने–पीने में मुश्किल न आये। उदाहरण के तौर पर रोटियां आमतौर पर चॉकलेट की शक्ल की बनायी जाती हैं और एक रोटी का वजन साढ़े चार–पांच ग्राम के आसपास होता है और उसे एक कौर में ही खाया जा सकता है। इन रोटियों को खासतौर पर सेलीफीन के थैलों में लपेटकर रखा जाता है। राकेश शर्मा की अंतरिक्ष यात्रा के समय कुछ ऐसे भारतीय भोजन भी अंतरिक्ष यान में रखे गये थे, जिन्हें पहली

दफा अंतरिक्ष यात्रा में शामिल किया गया था, जैसे आलू–छोले, शाकाहारी पुलाव और सूजी का हलवा।

अंतरिक्ष यात्रियों के भोजन के आधार पर अमरीका में अनेक कम्पनियों ने कई नयी खाद्य वस्तुएं बनाकर उनका धुंआधार प्रचार किया है। पिल्सबरी नामक एक कम्पनी ने तो 'स्पेस फूड स्टिक' ही बना डाली, जो सिगरेट के आकार की होती है। इसमें 8 प्रतिशत प्रोटीन, 70 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट और 13 प्रतिशत वसा होती है। शेष 9 प्रतिशत में विटामिन और खनिज होते हैं।

इस तरह के भोजन को तैयार करने में हवा का प्रयोग नहीं किया जाता। इस कारण यह कई दिनों तक खराब नहीं होता।

अंतरिक्ष यात्रा के दौरान इस टिकियानुमा भोजन को बगैर चबाये यूं ही गटक लिया जाए तो कोई दिक्कत नहीं, मगर इन टिकियों को गीला करना पड़ता है, पानी के इंजेक्शन लगाकर। उन पर नमक–मसाला भी छिड़कना पड़ता है, लेकिन नमक–मसाला लगाते समय सावधानी रखनी होती है, ताकि वह इधर–उधर न फैलने पाये। खाना खाते समय खाद्य वस्तु और मुँह के बीच की दूरी जितनी कम हो, उतना ही अच्छा। वहाँ पानी भी खुले गिलास से नहीं पिया जा सकता, बल्कि बच्चों की तरह बोतल से चूसकर पीना होता है क्योंकि गुरुत्वाकर्षण नहीं होने से पानी से भरा गिलास यदि उल्टा भी कर दिया जाये तो एक बूंद पानी फर्श पर नहीं गिरेगा और हल्का–सा झटका लगने पर कमरे में पानी की बौछार हो सकती है।

सूखी चीजों को गीला करने के लिए उसकी प्लास्टिक थैली के अन्दर ही इंजेक्शन लगाया जाता है, फिर थैली को दांतों के बीच दबाकर पके आम की तरह चूसना पड़ता है। आदमी की ग्रास नली का अनेक छल्लेदार मांसपेशियों से बनी होना अंतरिक्ष यात्रियों के हक में है वरना भोजन गले से नीचे ही नहीं उतरता।

अंतरिक्ष में यात्रियों को प्यास बहुत कम लगती है। दरअसल प्यास न लगने के मूल में कारण यह है कि अंतरिक्ष में शरीर के निचले हिस्से में खून कम, हृदय और मस्तिष्क के भाग में अधिक जमा हो जाता है। इससे यात्रियों को पानी की अधिकता का भ्रम होता है, फिर भी यात्रियों को यह बात प्रशिक्षण के दौरान बता दी जाती है कि प्यास न लगे तब भी पानी पीते रहें। यदि वे लगातार पानी नहीं पीयेंगे तो शरीर में पानी की मात्रा कम हो जायेगी और यह स्थिति उनकी सेहत के लिए नुकसानदेह होगी।

अंतरिक्ष में यान में बैठे यात्रियों को न तो भोजन की कमी होती है और न ही भोजन के स्वाद में कोई अन्तर आता है। केवल भोजन करने के तरीके में परिवर्तन आ जाता है।

संग्रहकर्ता : जगतार : 'चमन'

पहेलियां

1. अपनों के ही घर ये जाये,
तीन अक्षर का नाम बताये।
शुरू के दो अति हो जाये,
अंतिम दो से तिथि बताये।।

2. बीमार नहीं रहती,
फिर भी खाती है गोली।
बच्चे, बूढ़े डर जाते,
सुन इसकी बोली।।

3. खाते नहीं चबाते लोग,
काठ में कड़वा रस संयोग।
दांत जीभ की करे सफाई,
बोलो बात समझ में आई।।

4. मैं मरूँ मैं कटूँ,
तुम्हें क्यों आंसू आए।

5. ऊँट की बैठक, हिरण की चाल,
बोलो वह कौन है पहलवान।

6. कल बनता धड़ के बिना,
मल बनता सिरहीन।
थोड़ा हूँ पैर कटे तो,
अक्षर केवल तीन।।

7. आग लगे तो पानी बहे,
पानी गिरे तो जम जाए।
दूजो को दे रोशनी,
अपना बदन गलाए।।

8. शक्ति का मैं पैमाना हूँ,
तेज दौड़ का दीवाना हूँ।
कई रंगों में पाया जाता हूँ,
सबका जाना पहचाना हूँ।।

9. देखी रात अनोखी वर्षा,
सारा खेत नहाया।
पानी तो पूरा शुद्ध था,
पर पी न कोई पाया।।

10. रंग–बिरंगी प्यारी–प्यारी,
दिखने में मैं सबसे न्यारी।
छोटे हल्के पंख फैलाऊं,
बगिया में मैं रौनक लाऊं।।

11. सूरज–सा मेरा नाम है,
उस–सा ही रूप बनाऊं।
उसकी ओर ही करके मुखड़ा,
संग–संग चलती जाऊं।।

12. रात–रातभर खुशबू देती,
खूब खिलाती फूल।
दिन निकले तो फूलों की,
महकाना जाती भूल।।

(पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

बोधकथा : राजेन्द्र परदेसी

खुशी का भेद

बहुत समय पहले की बात है। शिवगढ़ में रतनसेन नाम का एक प्रतापी राजा राज्य करता था। उसके खजाने में अपार धन था। फिर भी उसे शांति नहीं मिल रही थी। अतः एक दिन वह भेष बदलकर राजमहल से अकेले निकल पड़ा। रास्ते में देखा कि एक किसान, जिसके तन पर ठीक से वस्त्र भी नहीं थे। मस्ती में गीत गाता खेत में काम कर रहा है।

किसान की दयनीय दशा को देखकर राजा को दया आ गई। वह उसके पास जाकर सोने की एक मुद्रा दिखाते हुए कहा– यह मुद्रा मुझे तुम्हारे खेत में मिली है। इसलिए तुम्हें दे रहा हूँ।

किसान बोला– यह मेरी नहीं है। किसी और की होगी, मैं नहीं लूंगा।

किसान की बातों को सुनकर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। राजा बोला– धन की आवश्यकता किसे नहीं होती। इसे ले लो।

मैं रोज चार पैसे कमाता हूँ। उसी में प्रसन्न हूँ। इसे आप स्वयं रख लें या किसी और को दे दें। किसान ने कहा।

''दिनभर में तुम चार पैसे कमाते हो, उसी में खुश रहते हो। लोग तो अकूत सम्पत्ति के होते हुए भी खुश नहीं रह पाते।'' राजा का कहना था।

''खुशी अधिक धन से नहीं बल्कि इससे मिलती है कि आप जो कमाते हैं, उसका उपयोग कैसे करते हो?'' किसान का उत्तर था।

''तो तुम चार पैसों का उपयोग कैसे करते हो?'' राजा ने सवाल किया।

राजा के सवाल पर किसान ने कहा– मैं चार पैसे में से एक कुएं में डाल देता हूँ, दूसरे से कर्ज चुकाता हूँ, तीसरे पैसे को उधार दे देता हूँ और चौथे को मिट्टी में गाड़ देता हूँ।

कहकर किसान अपने काम में लग गया।

किसान की बातें राजा की समझ में नहीं आईं। वह रातभर सोचता रहा। जब कोई हल नहीं निकला तो दूसरे दिन दरबारियों से इसका अर्थ बताने को कहा, परन्तु कोई भी संतोषजनक उत्तर न दे सका, तब राजा ने किसान को दरबार में लाने का आदेश दिया।

किसान डरते–डरते राजदरबार में उपस्थित हुआ परन्तु उसे समझ नहीं आ रहा था कि किस अपराध में उसे आने को कहा गया है। राजा उपस्थित होकर भेष बदलकर उससे मिलने की बात बतायी और उसके भय को समाप्त कर दरबार में सम्मान से आसन देकर बैठाया। फिर कहा– उस दिन मैं तुम्हारी बातों से बहुत प्रभावित हुआ, लेकिन तुमने चार पैसों के बारे में जो बताया, वह बात समझ में नहीं आयी। यही जानने के लिए तुम्हें बुलाया गया है।

किसान जब भयमुक्त हो गया तो बोला– राजन, चार पैसे की कमाई में से एक पैसा कुएं में डालने का अर्थ है कि इससे अपने परिवार का भरण–पोषण करता हूँ। दूसरे से कर्ज चुकाता हूँ इसका अर्थ है कि इस पैसे को अपने वृद्ध माता–पिता की सेवा करने में खर्च करता हूँ। तीसरे पैसे को उधार देता हूँ का अर्थ है कि इस पैसे को अपने बच्चों के पालन–पोषण में लगाता हूँ और चौथे पैसे को जमीन में गाढ़ देता हूँ का अर्थ है कि इस पैसे को भविष्य की सुरक्षा में लगाता हूँ, जिससे बुरे दिनों में किसी के सामने हाथ न फैलाना पड़े।

किसान की बातों से राजा को उसके खुश रहने का भेद मालूम हो गया कि खुश रहना है तो अर्जित धन का सीमा के अन्दर सही उपयोग करना होगा।

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

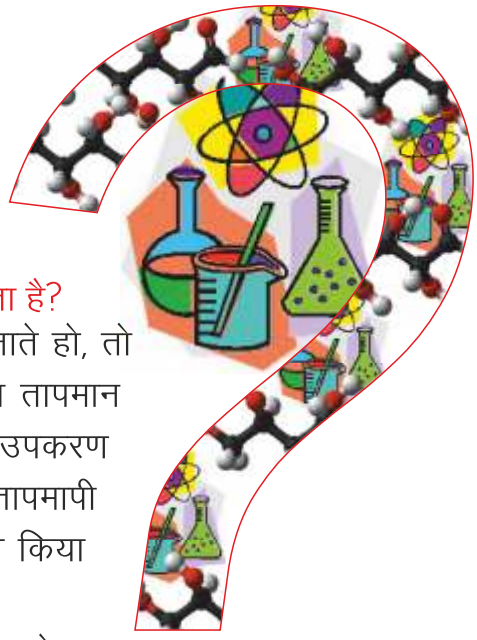

प्रश्न : थर्मामीटर में पारे का उपयोग क्यों किया जाता है?

उत्तर : तुम जब कभी भी तीव्र ज्वर से पीड़ित हो जाते हो, तो डॉक्टर दवा देने से पहले तुम्हारे शरीर का तापमान नोट करते हैं। तापमान ज्ञात करने में जो उपकरण काम में लाया जाता है, उसे थर्मामीटर या तापमापी कहते हैं। इस थर्मामीटर में पारे का उपयोग किया जाता है। जानते हो क्यों?

दरअसल, इसके कई कारण हैं। एक तो, पारा चमकदार होता है जिससे इसको देखना सुविधाजनक रहता है। दूसरे, कम एवं अधिक तापक्रम पर इसका प्रसार एवं संकुचन भी समान रूप से होता है। इसके अतिरिक्त थर्मामीटर की भीतरी दीवारों से पारा चिपकता (सटता) नहीं है।

प्रश्न : कोल्ड ड्रिंक्स की बोतलें मोटे कांच की क्यों बनाई जाती हैं?

उत्तर : दरअसल, कोल्ड ड्रिंक्स (शीतल पेयों) की बोतलों में उच्च दाब पर कार्बन–डाईऑक्साइड (CO_2) गैस भरी जाती है। गरमी के दिनों में इस गैस के आयतन में अपेक्षाकृत अधिक प्रसार होता है। ऐसा होने से पतले कांच की बोतलों के टूटने की संभावना अधिक रहती है। अतः गैस के उच्च दाब को सहन करने के उद्देश्य से ही बोतलें मोटे कांच की बनाई जाती हैं।

प्रश्न : दियासलाई अपने आप आग क्यों नहीं पकड़ती है?

उत्तर : स्टोव या चूल्हा जलाने के लिए प्रायः दियासलाई का प्रयोग किया जाता है। किन्तु, दियासलाई अपने आप कभी भी आग नहीं पकड़ती। जानते हो यह क्यों होता है?

दरअसल, जिस विशेष ताप (Temperature) पर कोई दाह्य पदार्थ जलना प्रारम्भ करता है, वह 'ज्वलन ताप' कहलाता है। दियासलाई का ज्वलन ताप कमरे या बाहर के तापमान से अधिक होता है। परिणामस्वरूप, दियासलाई अपने आप आग नहीं पकड़ती है।

आलेख : सीताराम गुप्ता

उपयोगी है पीपल का पेड़

वनस्पति विज्ञान के अनुसार पीपल मोरेसी कुल का सदस्य है। इसका वैज्ञानिक नाम है फाइकस रिलिजिओसा। पीपल को अंग्रेज़ी में इंडियन सेकरेड फिग या पीपल ट्री के नाम से भी जाना जाता है तथा संस्कृत में 'अश्वत्थ' व 'पिप्पल' के नाम से। पीपल 'पिप्पल' का ही तद्भव रूप है और समस्त उत्तर भारत में यह वृक्ष प्रायः इसी नाम से जाना जाता है। पीपल के पेड़ हर जगह उगे हुए मिल जाते हैं। ज़मीन पर ही नहीं घरों व इमारतों की छतों और दीवारों तक में।

असंख्य पक्षी पीपल के पेड़ों पर आकर बैठते हैं, इसके फल खाते हैं और फल खाकर जहाँ बीट कर देते हैं वहीं पीपल के पेड़ उग आते हैं। पीपल का पौधा अत्यंत हठीला होता है। एक बार उगने के बाद विषम से विषम परिस्थितियों में भी हार नहीं मानता और बढ़ता ही चला जाता है। कभी–कभी एक पतली सी दीवार में उगने के बावजूद पीपल वहीं पर एक विशाल वृक्ष में परिवर्तित हो जाता है। यही कारण है कि सड़कों के किनारे, घरों–गलियों व बाज़ारों में हर जगह पीपल के पेड़ दिखलाई दे जाते हैं। खाली पड़े घरों के खंडहरों में तबदील होने का एक प्रमुख कारण उनमें पीपल के पेड़ों का उगना भी होता है।

पीपल हमें शीतल छाया प्रदान करता है। हवा में हिलते हुए पीपल के पत्ते बहुत आकर्षक लगते हैं। पीपल पर्यावरण के लिए अत्यंत उपयोगी है क्योंकि यह अन्य वृक्षों के मुकाबले में अधिक ऑक्सीजन छोड़ता है। पीपल के इन्हीं गुणों के कारण हमें अधिक से अधिक संख्या में पीपल के वृक्ष लगाने चाहिएं और लगे हुए वृक्षों की देखभाल करनी चाहिए लेकिन अंधविश्वास से ऊपर उठकर ग़लत जगहों पर उगे हुए पेड़ों को उखाड़ने में कोई बुराई नहीं। ऐसे पेड़ों को पुनः अन्यत्र रोपा जा सकता है।

हर साल बसंत बीतने के साथ–साथ पीपल के पेड़ों के सारे पत्ते पीले होकर एक साथ झड़ जाते हैं। अन्य कई वृक्षों की तरह पीपल भी एक पर्णपाती वृक्ष है अर्थात् साल में एक बार इसके सारे पत्ते एक साथ झड़ जाते है। गर्मी के आरम्भ में पीपल का पेड़ फलों से लद जाता है और साथ ही नन्हीं–नन्हीं कोमल–कोमल गुलाबी पत्तियों से ढक जाता है। फलों के मौसम में इसके फल खाने के लिए विभिन्न प्रकार के पक्षी इस पर डेरा डाल लेते हैं और अपनी चहचहाहट के संगीत से सारे परिवेश को उत्सवमय और मनमोहक बना देते हैं। तब पीपल का वृक्ष बहुत सुंदर लगता है।

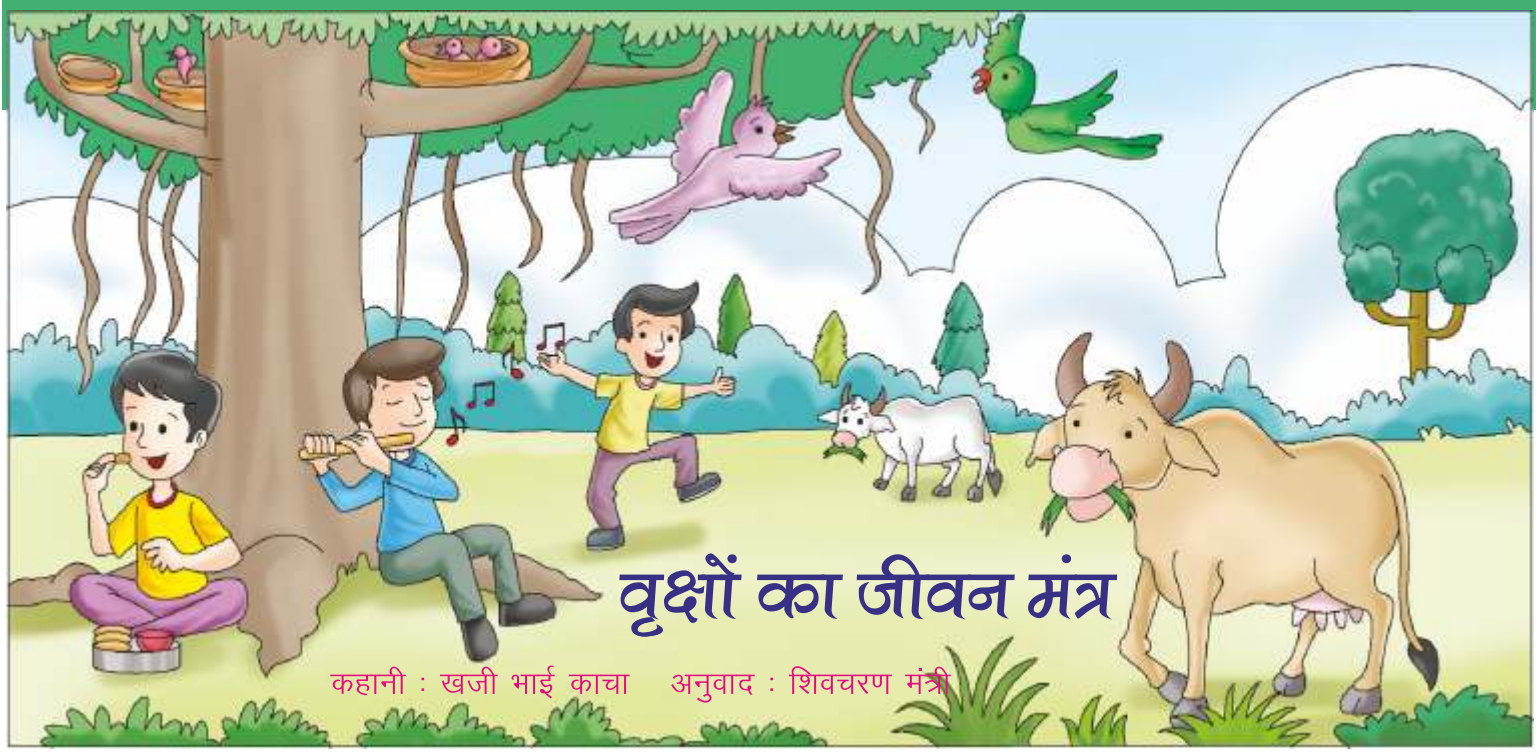

वृक्षों का जीवन मंत्र

कहानी : खजी भाई काचा अनुवाद : शिवचरण मंत्री

एक गाँव के विशाल मैदान में एक बहुत बड़ा बरगद का पेड़ था। उसकी घनी शाखाओं में सैंकड़ों पक्षी अपने घोंसले बनाकर सुख से रहते थे। नित्य प्रातःकाल गाँव के अनेक जानवर पेड़ के विशाल मैदान में घास चरने आते थे। विशाल मैदान में पशु जहाँ घास चरते वहीं ग्वाल–बाल बरगद की छाया में बैठकर अपनी बांसुरी बजाया करते थे। बरगद की विशाल छाया में बैठकर दोपहर का खाना खाते। शाम को स्कूल की छुट्टी होने पर स्कूल के बच्चे आकर ग्वालों के साथ खेलते। इस तरह सूरज उगने से लेकर सूर्य डूबने तक बरगद की विशाल छाया में बच्चे खेलते और जंगल के पक्षी और पशु आनन्द से रहते थे।

एक रात की बात। बरगद दादा की विशाल शाखाओं पर पक्षी अपने घोंसलों में सो रहे थे कि अचानक ठक्–ठक् की आवाज सुनाई पड़ी। भयभीत हुए बच्चों ने अपनी माताओं को जगाकर कहा, 'मम्मी, मम्मी जागो और सुनो कि कुछ आवाज आ रही है।' पर माताएं नींद में थीं। अतः बच्चों की बात को अनसुना करके नींद में सोती ही रही।

कुछ समय बाद ठक्–ठक् की आवाज और तेज होने लगी तो सब जाग उठे और सोचने लगे कि यह क्या हो रहा है। सभी जोर–जोर से चीखने–चिल्लाने लगे। छोटे बच्चे बिलख–बिलखकर रोने लगे। रात के पहरेदार जुगनू दौड़कर आए और अपनी सर्च–लाइटों को जलाकर मामला क्या है की खोज करने लगे।

पक्षियों ने बरगद दादा को नींद से जगाया। दादा ने आँखें खोलकर देखा तो जोर–जोर से ठक्–ठक्... की आवाजें आ रही थीं। अतः दादा ने हाथ में लाठी ली

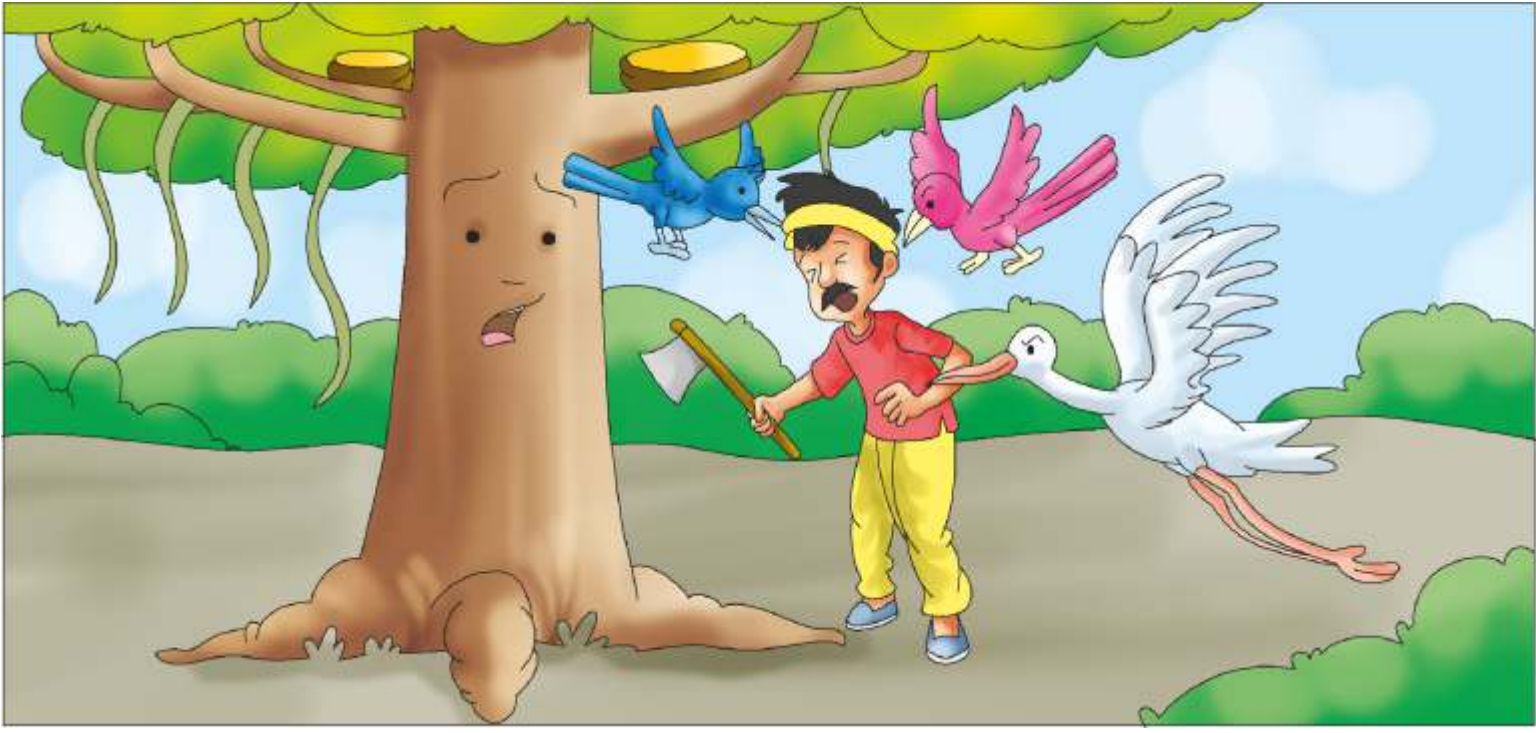

और आँखों पर चश्मा लगाकर दौड़े। दादा को दौड़ते देखकर पक्षी और जीव–जन्तु भी उनके पीछे हो गए। दादा ने देखा कि एक आदमी बरगद की एक मोटी शाखा को काट रहा है।

दादा ने उससे पूछा, ''अरे भाई! तू यह शाखा क्यों काट रहा है? तू यह नहीं देख रहा है कि इस शाखा पर कई पक्षियों के घोंसले हैं। ये बेचारे कहाँ जायेंगे?''

''जहाँ भी जाना हो जाएं। मुझे क्या? मुझे तो यह शाखा चाहिए।'' इतना कहकर वह आदमी पुनः शाखा काटने लगा।

''पर भाई, यह तो बता कि यह शाखा तेरे किस काम में आयेगी? यह गीली और टेढ़ी वट वाली है।'' बरगद ने कहा।

''मेरी झोंपड़ी का बीच का भाग टूटने को है, बस, उसी को सहारा देने के लिए यह शाखा काट रहा हूँ।'' आदमी ने अपने चेहरे का पसीना पोंछते हुए कहा।

''भाई! यह शाखा ही क्यों? गाँव के खातियो से कोई अच्छी लकड़ी खरीद ले।'' बरगद ने उपाय सुझाया।

''लकड़ी खरीदने को पैसा नहीं है।'' वह फिर बोला, ''दिनभर बहुत मेहनत करता हूँ, फिर भी पेटभर खाना नहीं मिलता है। बच्चों को न तो पढ़ने को भेज पाता हूँ और न ही उनके लिए कपड़े ला सकता हूँ। तदुपरांत कोई देख न ले इसी कारण रात में काटने आया हूँ।'' शाखा काटने वाले ने अपनी परिस्थिति बताते हुए कहा।

''हम तुझे यह शाखा नहीं काटने देंगे, हम लोग कहाँ जाएंगें? हमारे बच्चों का क्या होगा? अब तू यहाँ से भाग जा अन्यथा तेरी खैर नहीं है।'' कहते हुए कौवे, कठफोड़वा, बगुले आदि पक्षियों ने लकड़ी काटने वाले को मारना शुरू किया।

लकड़ी काटने वाला चोंचों की मार से बचने की कोशिश करने लगा पर सारे पक्षियों

से अपने आपको बचाने में कैसे सफल होता? अन्ततः दोनों पैरों के बीच सिर दबाकर वह बरगद के तने के सहारे बैठकर रोने लगा।

रोते हुए व्यक्ति पर बरगद दादा को दया आई और उन्होंने पक्षियों को शांत करते हुए कहा, ''इस गरीब की झोंपड़ी टूट गई तो यह कहाँ जायेगा? इसके बच्चे निःसहाय हो जायेंगे।''

''दादा, आप इसका पक्ष न लें। इसे जो भी करना हो करे, जहाँ भी जाना हो जाये। आपने हमारे लिए सोचना है, इसके लिए नहीं।'' पक्षियों ने एक स्वर में कहा।

''तुम्हारी बात सच है। पर यदि इसकी झोंपड़ी गिर पड़ी तो वह दूसरी नहीं बना पायेगा। मेरी यदि एक शाखा कट जाती है तो भी तुम निराधार नहीं होओगे। तुम दूसरी शाखाओं पर घोंसले बना सकोगे पर यह व्यक्ति क्या करेगा? हमें अपने ही लिए न सोचकर दूसरों के लिए भी सोचना चाहिए। हमें दूसरों के सुख में सुखी और दूसरों के दुख में दुखी होना सीखना चाहिए। तदुपरांत इस एक शाखा के कटने पर कई नई शाखाएं फूट आयेंगी। तुम्हें नये घर मिलेंगे। अतः कहता हूँ कि इस आदमी पर दया करके इसे शाखा ले जाने दो।'' दादा ने सबको समझाते हुए कहा।

''दादा, ऐसे आदमी पर दया नहीं दिखानी चाहिए। ऐसे व्यक्ति बदमाश होते हैं। आज यह एक शाखा काटेगा तो कल कोई दूसरी शाखा काटेगा, फिर तीसरी, चौथी और फिर यह क्रम चलता ही रहेगा।'' एक कौवे ने कहा।

''कौवे भाई! तुम्हारी बात तो सही है, पर क्या तुम्हें यह पता है कि व्यक्ति मरने के बाद कभी भी पुनः जिन्दा नहीं हो सकता परन्तु यदि मेरी सभी शाखाएं काट दी जाती हैं तो भी मैं जिन्दा रहूँगा। फिर नई शाखाएं उग आयेंगी। इस तरह भगवान ने पेड़ों को संसार की सेवा करने के लिए बनाया है। मेरे पत्ते, फल–फूल, लकड़ी आदि मेरी कहाँ हैं। ये सब भगवान की देन हैं। मैं तुम सभी को नया घर दूंगा। व्यक्ति चाहे कैसा भी हो, वह मेरी शरण में आया है। वह निःसहाय है। मैं किसी को भी निराश नहीं कर सकता हूँ। संसार के लिए उपयोगी होना मेरा धर्म है।'' बरगद ने सबको समझाते हुए कहा।

''दादा! यह व्यक्ति आपको हानि पहुँचाए, तुम्हें कष्ट दे, आपके अंग काटे ऐसे कई अपकार करने पर भी आप क्या उपकार ही करेंगे?'' एक उल्लू ने कहा।

''हाँ, बेटा उल्लू। अपकार करने पर भी उपकार करना यही तो वृक्षों का जीवन मंत्र है।'' मेरी बात मान जाओ।

''दादा, आपकी बात तो सही है पर आप इससे इसका एक हाथ या पैर तो मांगो ये नहीं देगा क्योंकि इसे पीड़ा होती है। इसी तरह यदि आपकी शाखा या तना काटे तो क्या आपको वेदना या दुःख नहीं होगा?'' एक कोयल ने मीठे स्वर में बहुत कड़वी बात कही।

''बेटा कोयल, हर सजीव प्राणी को वेदना तो होती है, पर भगवान ने व्यक्ति और वृक्ष में अन्तर रखा है। व्यक्ति का एक भी अंग टूटे या खंडित हो तो वह पुनः पैदा नहीं होता है और न वैसा बनता है। जबकि ईश्वर की वृक्षों पर कृपा है कि एक डाली कटने पर बहुत–सी कोपलें फूटती हैं और घने पत्ते लहलहाते हैं। अतः मेरी तुमसे प्रार्थना है तुम इस व्यक्ति के सहायक बनो।'' दादा ने कहा।

''नहीं दादा। आप प्रार्थना न करें। आप बड़े हैं, अग्रज हैं। हमें तो आपके साये, आश्रय की जरूरत है। आप तो आदेश करें। पक्षियों, दादा की बात चाहे सही हो या गलत हमें उसका पालन करना चाहिए। यह हमारा दायित्व है। दादा की आज्ञा मानना हमारा कर्तव्य है। हम सब अपने अपने घोंसले अन्य शाखाओं पर बना लें।'' एक बूढ़े बगुले ने सब पक्षियों को आदेश दिया।

बरगद दादा ने प्रसन्न होकर सभी पक्षियों का हार्दिक आभार व्यक्त किया और उस व्यक्ति को शाखा काट लेने का आदेश दिया।

''दादा, मैं तो इन वृक्षों और पक्षियों से भी गया गुजरा हूँ। पक्षी सत्य ही कहते हैं। मैं यह मानता हूँ कि मानव–जाति बड़ी अहसान–फरामोश होती है। मेरी झोंपड़ी भले ही गिर जाये, मैं बरगद और इस पर आश्रित पक्षियों को नाराज नहीं करना चाहता हूँ। मैं कहीं अन्यत्र स्थान ढूंढ लूंगा। मै इस घोर पाप में नहीं पड़ना चाहता।'' कहते हुए व्यक्ति ने बरगद दादा के पांव चूमे और एक अच्छा काम करके संतोष प्रदर्शित करके वहाँ से चला गया।

बाल कविताः डॉ. हरीश निगम

फुलझड़ियों-सी खिले हँसी

खील, बताशे, बम वाली,
आई, घर–घर दीवाली।

हैं दीपों के फूल खिले,
झूम उठी डाली–डाली।

भगा अंधेरा पूंछ दबा,
धाक जमाए उजियाली।

फुलझड़ियों–सी खिले हँसी,
कभी न हों बातें काली।

जितने चक्कर चरखी के,
उतनी बच्चों की ताली।

इतने लड्डू खाए हैं,
पेट नहीं बिल्कुल खाली।

दीवाली की खुशियों से,
भरी रहे मन की थाली।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

किट्टी बच्चे आलस छोड़ो। व्यायाम करो। दौड़ लगाओ।
अच्छा माँ। आ रही हूँ।
किट्टी चलो बेटा अब हमारे साथ योगा करो।
माँ आप ही कर लो न!
किट्टी इनसे मिलो ये हैं योगा सिखाने वाले गुरूजी।
नमस्ते अंकल।
नमस्ते बेटा। क्या बात है बेटा आप व्यायाम क्यों नहीं कर रहे हो?

अंकल व्यायाम करके क्या फायदा? इससे ज्यादा मज़ा तो सोने में आता है। सुबह जल्दी उठना तो मुश्किल होता है।
बेटा, सुबह जल्दी उठना और लेट उठना केवल एक आदत है, जो बदली जा सकती है। जैसी आदत डालोगे वैसी आदत पड़ जाएगी।
अंकल व्यायाम करने से क्या होता है। कितनेही लोग हैं जो व्यायाम नहीं करते।
बेटा उन्हें मत देखो जो व्यायाम नहीं करते। परन्तु उन्हें देखो जो व्यायाम करते हैं, कितना अच्छा है उनका स्वास्थ्य।

कैसे अंकल। क्या अच्छा है?
बेटा, आप अभी कितने छोटे हो और आपकी माँ आपसे कितनी बड़ी है। फिर भी वह पूरे घर का काम करती है, दफ्तर का काम करती है। सबका ध्यान रखती है और उनके चेहरे पर सेहत की चमक हमेशा रहती है।
ये तो है अंकल।
बेटा व्यायाम करने से दिमाग चुस्त रहता है। शरीर स्वस्थ रहता है। व्यक्ति हमेशा अपने कार्यों को दूसरों से अधिक क्षमता से करता है।
योगा करने वाला हमेशा स्वस्थ्य रहता है। वह लम्बे समय तक जवान रहता है। किसी पर निर्भर नहीं रहता। इसलिए कहा भी है कि अच्छा स्वास्थ्य सबसे बड़ा धन होता है।
अंकल, तो क्या अगर मेरी दादी माँ भी व्यायाम करती तो वह अभी तक चुस्त रहती।
हा हा... हाँ बेटा बिल्कुल।
वाह अंकल! मैं कल से रोज यहाँ आऊंगी व्यायाम करूँगी और अपनी सहेलियों को भी प्रेरित करूंगी, कि वे भी रोज़ व्यायाम करें।

विशेष लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

त्रिपुरा का राजकीय पशु

फेरी लंगूर

फेरीज लंगूर एक प्राइमेट है। (मनुष्य सदृश्य प्राणियों का परिवार) इसकी खोज श्री फेरी ने की थी। अतः इसे फेरी लंगूर कहते हैं। प्राइमेट के अन्तर्गत मानव सहित विभिन्न प्रकार के एप, बन्दर, टारसियर, बुशबेबीज, पोटोज तथा लैमूर आते हैं। ये सभी स्तनधारी जीव हैं तथा मानव को छोड़कर प्रायः सभी वनों में वृक्षों पर रहते हैं।

फेरी लंगूर भी एक बन्दर है। इसका वैज्ञानिक नाम ट्रैकीपिथेकस फेरेइ है। अंग्रजी में इसे 'फेरीज लीफ मंकी' कहते हैं। त्रिपुरा में यह दोधी बन्दर के नाम से जाना जाता है। त्रिपुरा और इसके आसपास के कुछ स्थानों पर इसे काला बन्दर भी कहते हैं।

फेरी लंगूर पुरानी दुनिया का बन्दर है। यह भारत के साथ ही म्यामार, बांग्लादेश, चीन, वियतनाम, लाओस और थाईलैंड में भी पाया जाता है। भारत में यह केवल उत्तर–पूर्व के तीन राज्यों में ही मिलता है। ये हैं– आसाम, मिजोरम और त्रिपुरा। त्रिपुरा ने इसे अपना राज्य पशु घोषित किया है।

फेरी लंगूर सागर की सतह से 800 मीटर की ऊँचाई वाले स्थानों पर नमी वाले सदाबहार वनों और बांस के जंगलों में पाया जाता है। यह पर्वतीय वनों में नदियों अथवा इसी तरह के जलस्रोतों के निकट रहना अधिक पसन्द करता है, किन्तु इसे बहुत बड़ी संख्या में चहल–पहल वाले चाय के बगीचों में भी वृक्षों पर देखा जा सकता है।

फेरी लंगूर हमेशा समूह में रहता है। इसके एक समूह में एक नर होता है तथा अनेक मादाएं होती हैं और उनके बच्चे होते हैं। समूह में सदस्यों की संख्या 3 से 30 तक हो सकती है। त्रिपुरा के वनों में पाये जाने वाले फेरी लंगूर प्रायः 8 से लेकर 15 तक के सदस्यों वाला समूह बनाते हैं। इसका समूह प्रतिदिन छोटे–छोटे उपसमूहों में विभाजित हो जाता है। एक उपसमूह में एक वयस्क मादा और उसके एक अथवा दो बच्चे रहते हैं। ये समूह उसी दिन पुनः आपस में मिल जाते हैं और एक बड़ा समूह बना लेते हैं। एक समूह के सदस्य आपस में सम्बन्ध बनाये रखने के लिए एक दूसरे पर नज़र रखते हैं।

ये किसी हिंसक जीव के निकट आने पर अथवा अन्य किसी भी प्रकार के खतरे का आभास होते ही अपने मुँह से एक विशेष प्रकार की चेतावनी देने वाली आवाज (वॉर्निंग कॉल) निकालते हैं। यह कार्य प्रायः समूह के नर सदस्य द्वारा अथवा नेता द्वारा किया जाता है। फेरी लंगूर अपने समूह के सदस्यों को खतरे की सूचना देने के लिए और उन्हें सावधान करने के लिए पहले 'हू' जैसी आवाज निकालता है। इसके बाद फिर लगातार दो बार 'चेंगकांग–चेंगकांग' जैसी लम्बी और तेज आवाजें निकालता है।

फेरी लंगूर की शारीरिक संरचना अपने वंश के अन्य लंगूरों के समान होती है। किन्तु इनके शरीर के आकार, रंग, चेहरे की बनावट तथा आदतों व्यवहारों में पर्याप्त अन्तर होता है। फेरी लंगूर के शरीर की लम्बाई 50 सेंटीमीटर से लेकर 55 सेंटीमीटर तक एवं शरीर का वजन 7 किलोग्राम से लेकर 9 किलोग्राम तक होता है। इसकी पूँछ इसके शरीर से भी अधिक लम्बी होती है। इसकी लम्बाई 80 सेंटीमीटर तक हो सकती है। मादा फेरी लंगूर नर से कुछ छोटी होती है। इसके शरीर की लम्बाई 47 सेंटीमीटर से लेकर 52 सेंटीमीटर तक तथा वजन 6 किलोग्राम से 8 किलोग्राम तक होता है। मादा फेरी लंगूर की पूँछ भी नर से छोटी होती है। इसकी लम्बाई लगभग 75 सेंटीमीटर होती है। फेरी लंगूर के शरीर का रंग धूसर से लेकर काला तक हो सकता है। रंगों का यह अन्तर स्थान पर निर्भर करता है। एक स्थान के फेरी लंगूर का शरीर हल्का धूसर होता है तो दूसरे स्थान के फेरी लंगूर का शरीर गहरा धूसर होता है। इसी तरह अन्य स्थान पर पाये जाने वाले फेरी लंगूर का शरीर काला भी हो सकता है। इसकी भौहें तथा हाथों और पैरों के पंजे पूरी तरह काले होते हैं। फेरी लंगूर के दोनों हाथ, दोनों पैर तथा पूँछ का रंग सुनहरापन लिये हुए धूसर होता है। इसकी दोनों आँखों के चारों ओर सफेद रंग के धब्बों का घेरा–सा होता है, जिससे ऐसा लगता है, मानो यह चश्मा लगाये हो। इसीलिए इसे चश्मे वाला बन्दर भी कहते हैं। इसके ऊपर और नीचे के होंठों पर भी इसी प्रकार के सफेद धब्बे होते हैं। फेरी लंगूर के सर पर बालों की कलगीदार टोपी होती है, जिसकी सहायता से इसे सरलता से पहचाना जा सकता है। यह टोपी नर और मादा दोनों में पायी जाती है तथा जीवनभर बनी रहती है।

फेरी लंगूर दिवाचर है। यह रात के समय किसी वृक्ष की शाखा पर सोता है और दिन में भोजन करता है। यह मुख्य रूप से वृक्षवासी है। अतः अपना अधिकांश भोजन विभिन्न प्रकार के वृक्षों से भी प्राप्त कर लेता है, किन्तु कभी–कभी यह भोजन की खोज में जमीन पर भी आ जाता है। फेरी लंगूर प्रातःकाल होते ही समूह में भोजन की खोज में निकल पड़ता है और दोपहर तक भोजन करता है। आसाम के मध्य भाग के संरक्षित वनों में यह मुख्य रूप से बांस की पत्तियां, ताजी कोपलें और कुछ अन्य वृक्षों की

पत्तियां खाता है। फरवरी के अन्त में जब बांसों में फूल आते हैं और बांसों के वृक्ष पूरी तरह फूलों से लद जाते हैं तब यह पूरे–पूरे दिन भोजन करता है। त्रिपुरा के सिपाहीजाला अभयारण्य का फेरी लंगूर रबर के वृक्षों की नयी–नयी कोपलें और पत्तियां बहुत पसन्द करता है। वर्षा वनों में रहने वाले फेरी लंगूर का भोजन भी लगभग ऐसा ही होता है। मिजोरम के मालेन राष्ट्रीय उद्यान में रहने वाले फेरी लंगूर का सीमा क्षेत्र बहुत बड़ा होता है तथा यहाँ विविधतापूर्ण भोजन भी उपलब्ध होता है। फिर भी यह अपना अधिंकांश समय बांस की नयी कोपलें और पत्तियां खाने में ही व्यतीत करता है।

फेरी लंगूर के नवजात बच्चे का रंग नारंगी होता है। समूह की वयस्क मादाएं केवल नारंगी रंग के बच्चों को ही दूध पिलाती हैं और एक–दूसरे के साथ इनका आदान–प्रदान करती हैं। नवजात बच्चा दिनभर कभी एक मादा के पेट से चिपकता है तो कभी दूसरी मादा के और कभी जन्म देने वाली माँ के पास आ जाता है। यह रात के समय प्रायः जन्म देने वाली माँ के पास आ जाता है। तीन माह की आयु में नवजात बच्चे के शरीर का रंग बदलना आरम्भ हो जाता है और पाँच माह का होते–होते इसके शरीर का रंग वयस्कों जैसा हो जाता है। मादा फेरी लंगूर अपने बच्चे को प्रायः 10 माह से लेकर 12 माह तक दूध पिलाती है तथा दो वर्षों के अन्तर से दूसरे बच्चे को जन्म देती है, किन्तु कभी–कभी कोई बच्चा लम्बे समय तक माँ का दूध पीता है। यही कारण है कि त्रिपुरा और मेघालय के जंगलों में कभी–कभी नवजात शिशु के साथ एक बड़े बच्चे को दूध पिलाती हुए मादाएं भी देखने को मिल जाती हैं।

फेरी लंगूर का अभी तक प्राकृतिक अवस्था में अध्ययन नहीं किया गया है, किन्तु यह निश्चित है कि इनकी संख्या बहुत कम बची है एवं दिन–प्रतिदिन और कम होती जा रही है। इसका प्रमुख कारण उत्तर पूर्व के जंगलों की कटाई है। इससे इनके निवास छोटे होते जा रहे हैं और संख्या कम हो रही है। जंगलों की कटाई का इस क्षेत्र के अन्य बन्दरों की संख्या पर भी प्रतिकूल कारण इनका अवैध शिकार है। एक लम्बे समय से चीन के पारम्परिक चिकित्सक देशी दवाएं तैयार करने के लिए इनका शिकार कर रहे थे। नमकीन जलस्रोतों के निकट रहने वाले फेरी लंगूरों के पित्ताशय के पास एक विशेष प्रकार की गाँठ विकसित हो जाती है जिसे पित्ताश्भरी कहते हैं। इसी पित्ताश्भरी से अनेक प्रकार की देशी दवाएं तैयार की जाती हैं तथा इसी के लिए इनका शिकार किया जाता है। भारत सरकार ने फेरी लंगूरो को बचाने के लिए कोई विशेष प्रयास तो नहीं किये हैं, किन्तु वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 के अन्तर्गत इनके शिकार पर पूरी तरह प्रतिबन्ध लगा दिया है।

प्रेरक–कहानी : अभय कुमार जैन

व्यवहार-कुशलता का पुरस्कार

अमेरिका के जाने–माने धनी व्यक्ति 'रॉकफेलर' की पत्नी एक दिन शाम के समय टहलने निकल गई। लौटते समय एकाएक ही मूसलाधार वर्षा शुरू हो गई। बरसात से बचने के लिए वह पास ही के एक दफ्तर के बरामदे में खड़ी हो गई। कार्यालय बन्द हो रहा था, मैनेजर जा चुका था और कर्मचारी भी जा चुके थे। बस एक चपरासी और एक क्लर्क, जो कार्यालय बन्द करके चाबी अपने साथ ले जाता था, वहाँ रह गये थे। क्लर्क ने बरामदे में खड़ी उस भद्र महिला को देखा। वह उसे पहचानता नहीं था परन्तु फिर भी सामान्य शिष्टाचार के नाते उसके पास बाहर आया और बोला– ''सिस्टर, आप बाहर क्यों खड़ी हैं, पानी के छींटें भी आपको लग रहे हैं। आप अन्दर आ जाइये और कुर्सी पर आराम से बैठिये।''

श्रीमती रॉकफेलर उसके सामान्य शिष्टाचार से बहुत प्रभावित व प्रसन्न हुई एवं वह भीतर आकर कुर्सी पर बैठ गई। क्लर्क ने चपरासी से कहा कि तुम जाओ। मैं बाद में कार्यालय बन्द करके चाबी तुम्हें देता निकल जाऊंगा।

श्रीमती रॉकफेलर ने उस क्लर्क का परिचय पूछा। यह भी जानना चाहा कि वह उसे पहचानता है या नहीं? उसने कहा– तुम्हारी पत्नी और बच्चे घर पर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे होंगे, देर हो जायेगी।

क्लर्क ने मुस्कुराकर उत्तर दिया, ''ऐसी कोई बात नहीं है। आप आराम से बैठिए, बरसात कुछ ही देर में थम जायेगी।''

बरसात बन्द हुई। श्रीमती रॉकफेलर उठ खड़ी हुई। बड़ी भद्रता के साथ उस क्लर्क ने उन्हें बाहर तक पहुँचाया और कार्यालय बन्द करके घर पहुँचा।

दूसरे दिन कार्यालय के समय फोन की घंटी बजी। मैनेजर ने फोन उठाया तो उधर से आवाज आई। ''मैं रॉकफेलर बोल रहा हूँ।''

मैनेजर सकपका गया और बोला, ''जी–जी कहिए।''

''आपके कार्यालय में अमुक नाम का कोई क्लर्क है?''

''जी है, आप मुझे फरमाइये क्या हुआ है?'' मैं मैनेजर बोल रहा हूँ।

''नहीं, फला क्लर्क को ही बुलाइये। मुझे उसी से काम है।''

मैनेजर को बड़ा आश्चर्य हुआ, रॉकफेलर जैसा अमेरिका का धनवान व्यक्ति उस छोटे से क्लर्क का नाम भी जानता है और उसी से बात करना चाहता है।

क्लर्क को बुलाया– तुम्हारे लिए रॉकफेलर का फोन है।

क्लर्क के होश उड़ गये कि क्या बात हो गई।

कांपते हाथों से उसने टेलीफोन पकड़ा और अभिवादन किया।

''श्रीमान, फरमाइये आपको मुझसे क्या काम है, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?''

रॉकफेलर बोला– ''कल तुम्हारा कार्यालय बन्द होते समय बरसात में एक महिला तुम्हारे बरामदे में खड़ी थी, उसे पहचानते हो?''

क्लर्क– ''जी नहीं, मैं तो सिर्फ इतना ही जानता हूँ कि वह कोई भद्र महिला थी पर शायद मैंने कोई गलत व्यवहार तो नहीं किया? फिर भी कोई गलती या भूल हुई हो तो क्षमा करें।''

रॉकफेलर– ''तुम्हारी तो कोई गलती या भूल नहीं हुई है, किन्तु तुम्हारी सज्जनता और शिष्टाचार ने मुझे व मेरी पत्नी को बहुत प्रभावित किया है। हम एक नया कारखाना खोल रहे हैं। उसमें मैं तुम्हें मैनेजर बनाना चाहता हूँ।''

क्लर्क को अपने कानों पर सहज ही विश्वास नहीं हुआ। एक साधारण–सी सज्जनता और व्यवहार–कुशलता का इतना बड़ा पुरस्कार, एक छोटी–सी फर्म का एक क्लर्क, एक कारखाने का मैनेजर बन गया।

बाल कविता : गोविन्द भारद्वाज

बापू प्यारे

बाबा गाँधी बापू प्यारे,
कहते बच्चे मिलके सारे।

सत्य–अहिंसा के नेक राही,
स्वतंत्रता के वीर सिपाही।

चरखा काते सूत निकाले,
पहने खद्दर लगे निराले।

बदन लिपटी एक लंगोटी,
खाते थे बस आधी रोटी।

सादा जीवन ऊँचे विचार,
रखा हमेशा मधुर व्यवहार।

नेता गाँधी सबसे न्यारे,
बाबा गाँधी बापू प्यारे।

कविता : हरजीत निषाद

लाल बहादुर शास्त्री महान

कद छोटा था ऊँची शान,
लाल बहादुर शास्त्री महान।
सत्य सादगी वाला जीवन,
शास्त्री जी की थी पहचान।।

पिता शारदा का परिवार,
राम दुलारी माँ का प्यार।
मुगलसराय में जन्मे थे,
दो अक्टूबर उन्नीस सौ चार।।

गूंजे गाँव शहर गलियारे,
जय जवान जय किसान के नारे।
अन्न बढ़ाया शत्रु मिटाया,
प्रधानमंत्री थे जन–जन के प्यारे।।

ग्यारह जनवरी उन्नीस सौ छियासठ,
मौत ने दी आने की आहट।
विजयघाट पर सोया लाल,
आज दिलों में बसा है घट–घट।।

पढ़ो और हँसो

मंगलग्रह सूर्य से चाँद की शिकायत करते हुए बोला– चाँद सौरमण्डल का सबसे बड़ा मूर्ख है।

सूर्य : क्यों, किसलिए मूर्ख है?

मंगलग्रह : चाँद ने सौरमण्डल के नियमों को तोड़कर इतनी जल्दी अपने यहाँ आदमी को पानी की झलक दिखा दी।

सूर्य : घबराओ नहीं। मैं चाँद पर व्याप्त पानी को अपनी किरणों से तुम्हारी तरह सूखा दूंगा। आदमी के हाथ कुछ न लगेगा। अब तो तुम खुश।

मंगलग्रह : (खुश होते हुए) ये हुई न बात।

– विकास कुमार (बेगूसराय)

प्रवीण 6 महीने के एक बच्चे के रोने की आवाज रिकॉर्ड कर रहा था।

दिनेश : (प्रवीण से) ओय! तू यह क्या कर रहा है?

प्रवीण : अरे यार, मैं इस बच्चे की आवाज रिकॉर्ड कर रहा हूँ।

दिनेश : क्यों?

प्रवीण : जब ये बड़ा होगा, तब मैं इससे पूछ तो पाऊँगा कि वह क्या बोलना चाह रहा था?

– अंकुर (दिल्ली)

एक आदमी : (आम वाले से) क्या ये लंगड़े आम हैं?

आमवाला : जी हाँ, लंगड़े नहीं होते तो मैं इन्हें रेहड़ी में भरकर क्यों घूमता।

बस स्टैण्ड पर एक व्यक्ति अपनी पत्नी और तीन बच्चों के साथ बहुत देर से खड़ा था। काफी देर बाद एक आदमी उसके पास आया और बोला– क्यों भाई, जबसे तुम यहाँ आये हो, तब से न जाने कितनी बसें आयीं और चली गईं। पर तुम किसी भी बस में नहीं बैठे?

वह व्यक्ति बोला– क्या करूँ? भाई साहब! जो भी बस आती है। उस पर लिखा होता है। 'हम दो, हमारे दो' पर हम तो पांच हैं।

– सोनी निरंकारी (खलीलाबाद)

ऑपरेशन सफल होने के बाद मरीज को डॉक्टर ने कहा– अब तुम खतरे से बाहर हो, फिर भी तुम इतने क्यों डर रहे हो?

मरीज बोला– दरअसल, डॉक्टर साहब, मैं जिस ट्रक से टकराया था, उस ट्रक के पीछे लिखा था– 'फिर मुलाकात होगी।'

– अमित कुमार (दरभंगा)

मालिक : (नौकर से) रामू मैं नदी में डूब रहा हूँ।

रामू : मालिक अभी न डूबिए, आपने मेरा तीन महीने का वेतन देना है।

– श्याम बिल्दानी (बड़नेरा)

वेटर : आपने समोसे और पकौड़े को अन्दर से खा लिया, लेकिन बाहर का सारा छोड़ दिया। ऐसा क्यों?

कस्टमर : क्योंकि, डॉक्टर ने कहा है, बाहर का खाना मत खाओ।

एक लड़का ऐसे ही फोन घुमा रहा था कि किसी किरायने की दुकान का नम्बर मिल गया।

लड़का : आपके पास चीनी है?

दुकानदार : हाँ है।

लड़का : घी है?

दुकानदार : हाँ है।

लड़का : सूजी है?

दुकानदार : हाँ है।

लड़का : फिर आप सूजी का हलवा बना कर मेरे घर भेज दो।

मोनू : (सोनू से)! बताओ विटामिन–सी सबसे अधिक किसमें होता है?

सोनू : (झट से) मिर्च में।

मोनू : वह कैसे?

सोनू : क्योंकि उसे खाकर सब 'सी–सी' जो करने लगते हैं।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

माँ : बेटा जरा डेयरी से दूध तो ले आओ।

बेटा : हाँ माँ अभी लाता हूँ।

माँ : बेटा दूध नहीं लाया क्या?

बेटा : (खाली हाथ) रास्ते में सब गाड़ियां मुझे 'पी–पी' कह रही थीं तो मैंने दूध पी लिया।

सोहन : शीबा तुमने मेरा बल्ला देखा है?

शीबा : हाँ।

सोहन : कहाँ है?

शीबा : मम्मी तुम्हारे बल्ले से कपड़ों के छक्कें छुड़ा रही हैं।

– नेहा (परतवाड़ा)

पहेलियों के उत्तर :

1. अतिथि, 2. बंदूक, 3. दातुन, 4. प्याज, 5. मेंढक, 6. कमल, 7. मोमबत्ती, 8. घोड़ा, 9. ओस, 10. तितली, 11. सूरजमुखी, 12. रातरानी।

वर्ग पहेली के उत्तर

1 हि	■	2 लो	क	ना	3 य	क
4 मा	इ	क	■	■	शो	■
च	■	■	5 का	ली	दा	6 स
7 ल	8 ह	सु	न	■	■	लि
■	ल	■	9 पु	र्त	10 गा	ल
11 दि	वा	12 क	र	■	ग	■
व	■	फ	■	13 सु	र	14 सा
15 स	त्ता	न	वे	■	■	क्षी

अगस्त अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. **खुशी शाक्या** 14 वर्ष
308, महावीर नगर,
भरथना, जिला : इटावा (उ.प्र.)

2. **रूचिता** 14 वर्ष
जी–161, सेक्टर 41,
नोएडा (उ.प्र.)

3. **महक** 12 वर्ष
दिल्ली पब्लिक स्कूल,
झाकरी, जिला : शिमला (हि.प्र.)

4. **प्रतिभा यादव** 11 वर्ष
म.नं. 160/12, गली नं. 5,
कृष्णा कॉलोनी, गुरुग्राम (हरियाणा)

5. **सिमरन** 13 वर्ष
606–बी, आदर्श नगर,
फगवाड़ा (पंजाब)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

सुहावनी (मोतिया खान, दिल्ली), इशिता (गोपेश्वर, चमोली), ऐश्वर्या (देहरादून), उमंग अरोड़ा (राणा प्रताप बाग, दिल्ली), मोहित (रिकांगपिओ), समीक्षा (सुन्दर नगर, अजमेर), शगुन (अल्मोड़ा), शिवांगी (अम्बरनाथ, ठाणे), अमृता (सरायरैचन्द), प्रेक्षा (कटिहार), शोभिता (संगरिया), महक (मालवीय नगर, दिल्ली), यश (रायपुर), यवनिका (भरमोटी कलां), आकर्ष (वाराणसी), रामसुख (बर्सिवास), प्रेमप्रकाश (सरदार शहर), सोमजानी, विशाखा, दक्ष, सेवनी, काजल, भूमि, सोनिया (गोधरा)।

अक्टूबर अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर 20 अक्टूबर तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) दिसम्बर अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

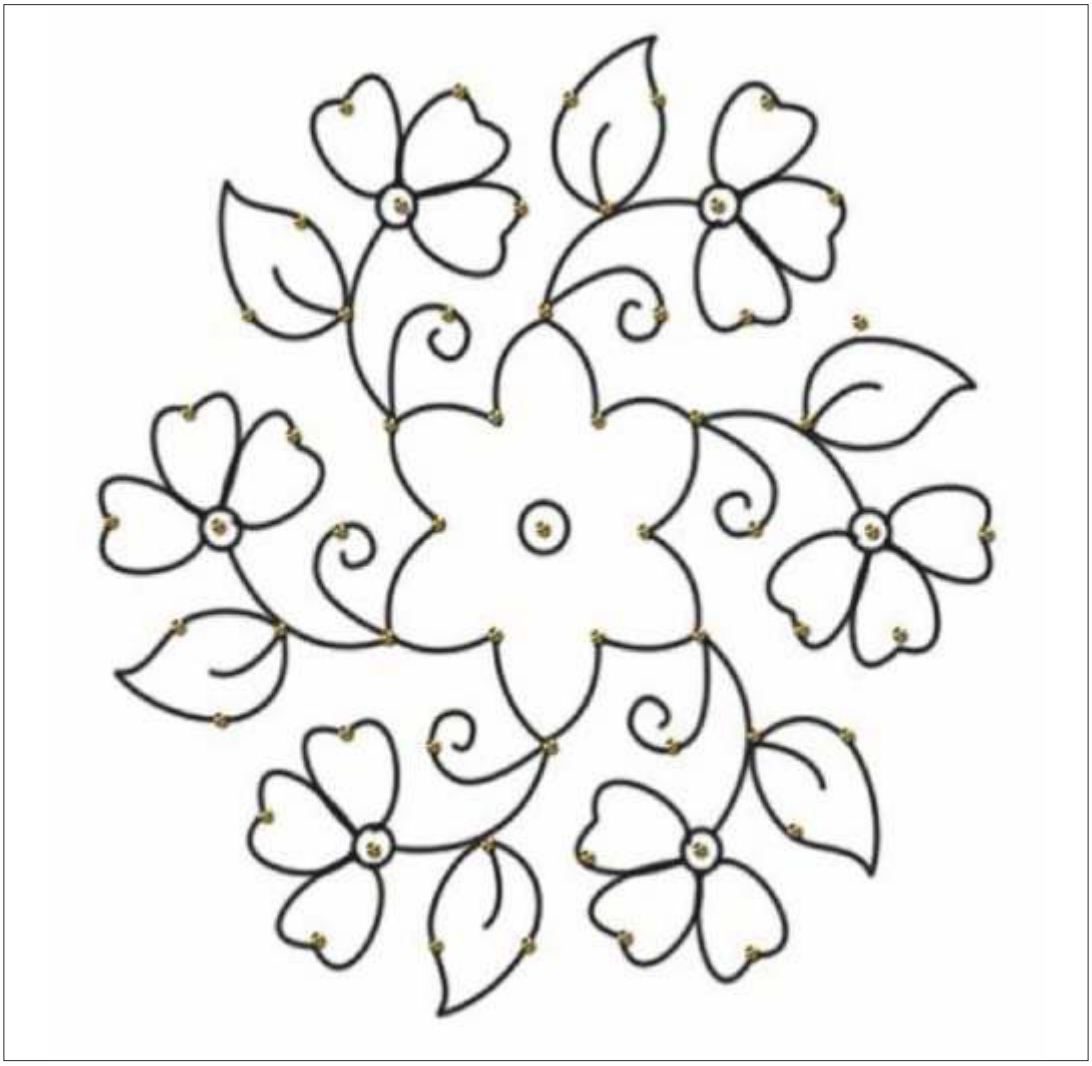

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

आपके पत्र मिले

आई दिवाली

घर–घर छाई है खुशहाली,
देखो आई है दीवाली।
बच्चे खेले धूम मचाते,
और पटाके कहीं चलाते।
सभी सजाये हैं अपने घर,
खुशी मनायें दीप जला कर।
लक्ष्मी पूजा सभी कराते,
सुख–समृद्धि द्वार बुलाते।

प्रस्तुति : महेन्द्र सिंह शेखावत

प्यारे बापू

प्यारे बापू फिर आ जाओ,
अब तुम मेरे गाँव।
तेरे संग–संग आज चलेंगे,
यहाँ हजारों पांव।
झूठ और हिंसा में डूबा,
आज सभी हैं गाँव।
सत्य अहिंसा की ड्योढ़ी पर,
फिर रख दो अपना पांव।

प्रस्तुति : डॉ. रामदुलार सिंह 'पराया'

हँसती दुनिया बहुत ही अच्छी और प्यारी पत्रिका है। इसमें हमें समयानुकूल शिक्षाप्रद और नई–नई जानकारी तथा बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

जून अंक में कहानियां 'कौए की समझदारी' (सांकलचंद पटेल) एवं 'महानता शिवाजी की' (डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी) बुद्धिमत्ता एवं वीरता को दर्शाती है।

'आया जमाना रोबोटिक्स टेक्नोलॉजी का' (डॉ. विनोद गुप्ता) लेख में आने वाले समय की जानकारी देता है।

कविताएं सभी शिक्षाप्रद हैं। कुल मिलाकर सम्पूर्ण सामग्री शिक्षाप्रद एवं ज्ञानवर्द्धक है। इसी तरह की सामग्री देते रहें।

–पुनिता सिंह (मुंबई)

मैं हँसती दुनिया मासिक का नियमित पाठक हूँ।

मैं और मेरा परिवार इस पत्रिका को बड़े चाव से पढ़ते हैं। इस पत्रिका में मुझे विशेष रूप से 'सबसे पहले' एवं कहानियां तथा 'पढ़ो और हँसो' बहुत अच्छे लगते हैं। यह पत्रिका बच्चों के बौद्धिक विकास में सहायक है।

यह पत्रिका विशेष रूप से छोटे बच्चों तथा विद्यार्थियों के लिये लाभदायक है। इससे काफी अच्छी जानकारी एवं शिक्षा मिलती है।

मैं यह चाहता हूँ कि हँसती दुनिया संसार के कोने–कोने में पहुँचे जिससे सभी इससे लाभ उठा सकें।

– सनी कुमार (फिरोजाबाद)

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning
with exciting and fun features
highlights our mission's message.
Visit regularly to watch tiny tots
excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share
your talent
in form of
painting, poetry
& story

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
: Licence No. U (DN)-23/2015-17
: Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया (चार भाषाओं में) **सन्त निरंकारी** (ग्यारह भाषाओं में) **एक नज़र** (तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

Ph. 011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan

1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)

e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
31, Pratapganj,
VADODARA-390022 (Guj.)
Ph. 0265-2750068

KANNADA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road, Southend Circle,
Basavangudi, BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1-D, Nazar Ali Lane, Near Beck Bagan,
KOLKATA-700 019
Ph. 033-22871658

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd. Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)